अध्याय -3

भक्ति संगीत प्रस्तुत करनेवाले प्रमुख शास्त्रीय संगीत गायक कलाकारों का परिचय एवं योगदान

गत-द्वितीय अध्याय में की गयी चर्चा के माध्यम से हमें ज्ञात हुआ कि, सनातन धर्म के रक्षण हेतु तथा तत्कालीन परिस्थितियों के शिकार बने समाज के उद्धार के लिए; देश के कोने कोने से प्रकट हुए संतोंने 'भक्ति' मार्ग के प्रचार का एवं 'लोकोपदेश' का अद्भुत कार्य किया | इन सभी संतोंने, प्रदेशानुरूप मातृभाषा अथवा आम जनता ग्रहण कर सके ऐसी लोकभाषा में; अपने साहित्य के अंतर्गत; भजन, साखी, दोहे, चौपाई, अभंग आदि की रचना की | संत साहित्य की उपरोक्त सभी रचनाएँ गेय होने से, जादातर संतों ने 'संगीत एवं साहित्य' के संगम से समाज का उद्बोधन किया; जिसका प्रभाव समाज के सभी वर्गों पर पड़ा | शास्त्रीय संगीत की साधना करनेवाले कलाकारों ने भी इन संत रचनाओं को स्वरबद्ध करके, भिन्न भिन्न माध्यमों के जरिये, उन्हे समाज में प्रस्तुत किया |

अतः इस अध्याय में, शोधार्थी ने चयन किये हुए, शास्त्रीय संगीत के साथ साथ 'भक्ति संगीत' को दिल से चाहकर उस विषय में उल्लेखनीय कार्य करने वाले प्रमुख कलाकारों का संक्षिप्त परिचय देकर उनके कार्य का जिक्र किया है |

3.1 पंडित भीमसेन जोशी (ई. स.1922 - ई. स. 2011)

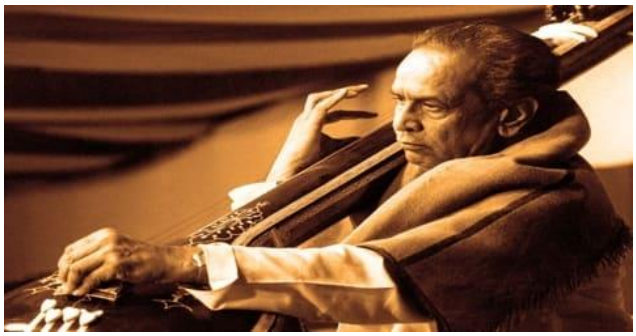

भारतीय शास्त्रीय संगीत के विख्यात गायक ''स्वरभास्कर'' पं भीमसेन जोशी का जन्म, कर्नाटक के धारवाड़ जिले के 'गदग' नामक छोटेसे गाँव में, 4 फरवरी 1922 में

हुआ था | पंडित जी के दादा भीमाचार्य प्रवचनकार थे तथा स्वर साधना भी करते थे | पंडित जी की माता का गला बड़ा मधुर था और जब वे गाती थी तब छोटे भीमसेन बिल्कुल एकाग्रता से उन्हे सुनते थे | अतः बाल्य काल से ही पंडित जी के ऊपर 'संगीत' के संस्कार थे | परंतु पंडित जी को संगीत के प्रति होने वाले विशेष लगाव को इंगित करने वाली इस घटना के मुताबिक; 5 साल की उम्र में ही पंडित जी , रात के समय, उनके घर के द्वार पर से गुजरने वाली शादी की बारात में बज रहे संगीत के सुरों के प्रति आकर्षित होकर बारात के साथ में चलने लगे और नींद आने पर किसी घर के बाहर सो गए | थोड़ी देर बाद परिवार के लोगों के ढूँढने के बावजूद न मिलने पर, उनके पिताजी पुलिस के पास पहुँचे तब एक आदमी सोये हुए छोटे भिमु को गोदी में उठाकर पुलिस के पास ले आया था | इस प्रकार से बाल्य काल से सप्त सुरों में भीगे भिमु को संगीत के सिवा कुछ और दिखाई नहीं पड़ता था |

भीमसेन जी 11 साल के थे तब, उ. अब्दुल करीम खाँ साहब की निकली हुई पहली रिकार्ड को सुनकर, उसी क्षण, "मुझे ऐसा ही गाना गाना है" यह तय किया [1] और इसी मनीषा से, मौका मिलते ही घर छोड़कर गुरु की खोज में निकल पड़े | गुरु तलाशी की इस राह पर, पंडित जी, भूख-प्यास की परवाह किये बिना, जरूरत पड़ने पर भीख माँगकर, किसीके घर नौकर बनकर; ग्वालियर से दिल्ली, दिल्ली से कलकत्ता तथा अंत में जलंधर पहुँचे; और जिससे जो मिला वो ग्रहण करते गए | जलंधर में रहने तथा भोजन की उत्तम व्यवस्था के साथ, अंध ध्रुपद गायक 'मंगतराम' जी से संगीत की मुफ़्त शिक्षा मिलने के कारण; कुछ समय के लिए जलंधर में स्थिर होकर संगीत साधना करते हुए, वहाँ के कार्यक्रमों में तानपुरे पर संगत करने लगे | इसी सिलसिले में, वहाँ के प्रसिद्ध 'हरिवल्लभ' सम्मेलन में उनकी मुलाकात ग्वालियर के प्रसिद्ध गायक पं विनायकराव पटवर्धन से हुई | विनायकराव

[1] वाघमारे रमेश(2018). *हिन्दुस्तानी रागदारी संगीतातील सुवर्ण युगाचे मानकरी.* (प्रथम आवृति). मुंबई : ग्रंथाली प्रकाशन, पृष्ठ 5

जी को, छोटे भीमसेन का जलंधर राहनेका कारण ज्ञात होनेपर, उन्होंने, गदग के पास में रहनेवाले 'किराणा' घराने के महान गुरु 'रामभाऊ कुंदगोलकर' जी का जिक्र किया और घर वापस लौटने की सलाह दी | उन्ही की सलाह मानकर पंडित जी घर वापस आए, और योग्य समय पर अपने गुरु रामभाऊ कुंदगोलकर उर्फ सवाई गंधर्व से भेट होने के बाद उन्हे संतोष मिला | वैसे तो पंडितजी नौ साल की उम्र से ही गाँव के छोटे छोटे कार्यक्रमों में गाते थे परंतु गुरु से विधिवत शिक्षा ग्रहण करके, करीब सात दशकों तक; 'किरणा' घराने के श्रेष्ठ गायक के रूप में संगीत की अविरत सेवा करते रहे |

पंडितजी की अपनी विशिष्ठ एवं अत्यंत मधुर 'भीमसेनी' आवाज, मन को मोहित करने वाली आलापी, हृदय से निकलनेवाली ताने आदि के कारण उन्हे अपरिमित लोकप्रियता मिली| शास्त्रीय संगीत का कोई भी प्रकार अर्थात ख्याल, ठुमरी, टप्पा, भजन सभी को वे समान नजारिये से देखते थे और उतने ही प्रभावशाली रूप से गाते थे | अर्थात श्रोतागण कोई भी स्तर का हो फिर भी; पंडितजी सभी का मनोरंजन – आत्मरंजन करते ही थे |

जीस प्रकार से बाल्य काल से पंडितजी संगीत के वातावरण में पले बढ़े थे, उसी प्रकार से **'भक्ति के संस्कार'** भी उनकी परवरिश में अंतर्भूत थे | जिस प्रदेश में, अर्थात कर्नाटक के गदग में पंडितजी का जन्म हुआ था, वहाँ का वातावरण आज भी 'भक्तिमय' है | पंडित उपेन्द्र भट जी के मुताबिक, " कर्नाटक मे ऐसी प्रथा है कि, प्रातःकाल तथा सायंकाल में सर्व प्रथम भगवान के समक्ष दिया बत्ती करके भजन गाना होता है तत् पश्चात ही सभी जन अपने नित्य कर्मों का अनुसरण कर सकते है | इसी प्रथा को निभाते हुए पंडित जी की **माता** हररोज प्रातः एवं संध्या में संत **'पुरंदर दास'** जी के कन्नड भजन गाती थी और इन भजनों को पंडित जी बड़ी **भावुकता** से सुनते थे |" [2]

[2] भट उपेन्द्र, दूरध्वनी से साक्षात्कार, जनवरी 11, 2021

भीमसेनजी के गुरु, पंडित सवाई गंधर्व जी भी भक्ति गीत गाते थे और प्रत्येक **गुरुवार** को उनके गाँव के मंदिर में **भजन संध्या** करते थे |[3] अतः भीमसेन जी की गुरु परंपरा में भी भजन का चलन था | इसके अतिरिक्त **श्री राघवेंद्र स्वामी जी** भीमसेन जी के परिवार के **आध्यात्मिक** गुरु होने से, **'गुरु भक्ति'** की परंपरा उनके परिवार में थी | डॉ अशोक रानाडे जी के साथ साक्षात्कार में पंडित जी ने अपने आध्यात्मिक गुरु श्री राघवेंद्र स्वामी की कृपा प्राप्ति का किस्सा बताया है कि, "जीवन के एक मोड पर अपने संगीत के प्रति पंडित जी बड़े उद्विग्न थे | ऐसी मनस्थिति होने पर वे राघवेंद्र स्वामीजी के मठ में सेवा देने लगे | कुछ समय बाद, स्वामीजी के आशीर्वाद से पंडित जी ने प्रसन्नता का अनुभव किया; और तब से अपने संगीत के प्रति वे जैसा चाहते थे वैसा होने लगा | उसी मठ के पास तुंगभद्रा नदी के किनारे जब वे रियाज करते, तब एक काला कुत्ता सुनने बैठता और रियाज खत्म होते ही चला जाता था | उस कुत्ते को ढूँढने का या उसके बारे में जानकारी प्राप्त करनेका पंडितजी ने काफी प्रयास किया परंतु उसके बारे मे किसिको कुछ पता नहीं था | इसलिए पंडित जी उसे एक 'दैवी चमत्कार' मानते थे तथा काले कुत्ते के रूप कोई 'साक्षात्कारी' पुरुष उनका गाना सुनता था, ऐसा विश्वास उन्हे हुआ था |"[4] इस प्रकार से भक्ति परंपरा से जुड़े होने से छोटी उम्र से ही पंडित जी भक्ति गीत, भजन ई. 'गदग' की आम जनता के सामने गाने लगे और लोग उसे पसंद करने लगे **अर्थात 'भक्ति संगीत' गाते हुए ही पंडित जी को शुरुआत में प्रसिद्धि मिली**|[5]

भीमसेन जी, अपने गुरु सवाई गंधर्व जी के पास तालिम पाने के बाद, अपने कार्यक्रमों में अत्यंत व्यस्त रहेने लगे | 1972 तक तो उनकी किर्ती कश्मीर से कन्या कुमारी तक फैल चुकी थी | पंडितजी के सुरों का जादू ऐसा था कि शास्त्रीय संगीत ना समझनेवाले लोग भी उनकी महफ़िल सुनने

[3] भट उपेन्द्र, दूरध्वनी से साक्षात्कार, जनवरी 11, 2021

[4] पंडित भीमसेन जोशी साक्षात्कार- अशोक दा रानडे. सङ्गीतवेद (जून 5, 2016) https://www.youtube.com/watch?v=mzfD5UlMtlQ&t=412s

[5] भट उपेन्द्र, दूरध्वनी से साक्षात्कार, जनवरी 11, 2021

जाते थे और परमानन्द में डुबकी लगाते थे | किन्तु गाँव के देहाती तथा भाविक लोग पंडित जी के संगीत का आनंद नहीं ले सकते थे | ऐसी भाविक जनता के लिए ही पंडित जी ने केवल 'भक्ति संगीत' का कार्यक्रम करनेका निर्णय किया और संगीतकार रामभाऊ फाटक से इस के बारेमें सल्ला मशवरा किया | रामभाऊ मराठी संत साहित्य के अभ्यासक तथा उत्तम संगीत दिग्दर्शक होने से भक्ति संगीत का एक विशेष कार्यक्रम उन्होंने नियत किया | और **5 जुलाई 1972, आषाढ़ महीने की ग्यारस** को **'संतवाणी'** का **प्रथम** कार्यक्रम इतना **यशस्वी** हुआ कि उसी दिन आगे के 'संतवाणी' के कई कार्यक्रम तय हो गए|[6]

शुरूआत में 'संतवाणी' के कार्यक्रम 'पाँच से छह' घंटे रहते थे | "जय जय रामकृष्ण हरी" से शुरुआत होती थी और प्रत्येक अभंग पंडित जी 30-35 मिनिट गाते थे | उन अभंगों के बारे में निरूपण, श्रीमान राम शेवालकर, कवि वसंत बापट जैसे दिग्गजों के मुख से होता था | परंतु शुरूआत के 'जय जय रामकृष्ण हरी' से ही सभी लोग, भजन के साथ एकरूप हो जाते थे और घंटों के लिए खुद को भूलकर, एकतान होकर सुनते रहते थे | पंडित उपेन्द्र भट जी 'संतवाणी' के बारे में बात करते हुए आज भी रोमांचित हो जाते है और कहते है कि," **'संतवाणी' की वो अनुभूति** आज भी मै स्पष्ट रूप से महसूस कर सकता हूँ परंतु वो **शब्दातीत** है | 'इंद्रायणी काठी देवाची आळंदी' ये मराठी अभंग तो इतना अधिक लोकप्रिय था कि, पंडितजी ने इसके बारे में कहा था कि, इसने मुझे "भीमसेन" बना दिया |[7]

पंडित जी – 'स्वरभास्कर', अर्थात उन के ऊपर साक्षात सरस्वती का वरद हस्त होते हुए भी अत्यंत विनम्र थे | स्वयं के गायन के बारे मे वे कभी कुछ भी कहेते नहीं थे परंतु दूसरों से सीखने के

[6] वाघमारे रमेश(2018). *हिन्दुस्तानी रागदारी संगीतातील सुवर्ण युगाचे मानकरी.* (प्रथम आवृति). मुंबई : ग्रंथाली प्रकाशन, पृष्ठ 18

[7] भट उपेन्द्र, दूरध्वनी से साक्षात्कार, जनवरी 11, 2021

लिए सदैव तत्पर रहते थे | श्रीमती लता मंगेशकर जी तथा पंडित जी का अल्बम "राम श्याम गुन गान" के लिए; श्रीनिवास खले साहब के संगीत निर्देशन में पंडित जी को गाना था; तब उन्होंने खले साहब से अभंग सीखने पर उनको गुरु स्वीकार किया और गुरु पूर्णिमा के दिन उनकी विधिवत पूजा करके आशीर्वाद प्राप्त किये |[8]

श्री भरत कामत जी, जिन्होंने पंडित जी के साथ 18 साल तक तबला बजाया, उन्होंने साक्षात्कार दरमियान पंडित जी के बारे में बताया कि, "पंडित जी का व्यक्तित्व दैवी था | मानव देह में रहेनेवाले वे एक अवतारी पुरुष थे, जिसका अनुभव मैंने स्वयं लिया है और वो शब्दातीत है | पंडितजी श्रद्धा, निष्ठा, भक्ति एवं तपस्या का मूर्तिमन्त रूप था | पंडित जी 'भक्ति संगीत' तो इतना हृदय से गाते थे कि, गाते समय विट्ठल भगवान के साक्षात दर्शन उन्हे जरूर प्राप्त हुए होंगे | वे प्रत्येक कार्यक्रम मे अत्यंत भावपूर्ण तथा अपने गुरु के प्रति निस्सीम श्रद्धा एवं समर्पण से गाते थे | अतः उनके **अभंग या भजनों में** हमेशा से **ईश्वर की अनुकंपा** महसूस होती थी तथा सुरों में **लोगों को सम्मोहित** करनेकी शक्ति थी | भजन गाते समय उनके आवाज का उतार चढ़ाव, शब्दों के उच्चार तथा भाव सर्वोपरि होने से श्रोताओं को भी भगवान के दर्शन होते होंगे ऐसा मेरा मानना है |"[9]

पंडित जी के शिष्य श्री आनंद भाटे जी पंडित जी के बारे में बताते है कि, "गुरुजी का व्यक्तित्व अत्यंत भावना प्रधान था | वे गुरु या ईश्वर से जितनी भक्ति करते थे उतनी ही सुरों से करते थे | उनके गुरु सवाई गंधर्व जी के संस्कार तो उनपर थे ही परंतु, गुरुजी बाल गंधर्व जी को भी गुरु स्थान पर मानते थे अतः महफ़िल में उन्ही के समान बहुत अधिक मधुर एवं भावपूर्ण गाते थे | गुरुजी

[8] कामत भरत, साक्षात्कार,नवंबर30, 2021

[9] कामत भरत, साक्षात्कार,नवंबर30, 2021

संगीत के तथा सुरों के एक सच्चे सेवक थे | अतः अभंग गाने के बाद कई लोगोंको पंढ़रपुर पहूँचकर 'विठोबा' के दर्शन करनेका का आभास होता था |"[10]

डॉ अशोक रानाडे जी ने पंडित जी के साथ साक्षात्कार में कहा है कि, "भजन एक ऐसी चीज है कि जिसको सुनने के बाद कुछ भी बोलने की इच्छा न हो अर्थात मनस्थिति केवल अवाक् हो जाए ! और **पंडित** जी के **'भजन'** में यह ताकत है कि, उसे सुनने के बाद हम **अवाक एवं मुक** बन जाते है|"[11]

फिल्म निर्देशक गुलजार जी के साथ साक्षात्कार में पंडित जी ने फिल्मों में गायें हुए भजनों का जिक्र किया है | उन्होंने बताया है कि, "शास्त्रीय संगीत के पास आनेवाली अर्थात शास्त्रीय संगीत पर आधारित धुनों पर पंडित जी ने फिल्मों में भजन गायें है और उसीमें से 'रघुवर तुमको मेरी लाज' यह भजन को गाने के लिए उन्हे 'प्रेसीडेंट अवॉर्ड' मिला था | पंडित जी ने और आगे कहा कि, कलाकार जो भी गाता है वो श्रोतागण तक पहुँचना जरूरी है | अर्थात हृदय से हृदय तक जाना चाहिए |"[12]

सिद्धि एलबम के लिए शेखर सुमन जी द्वारा पंडितजी के साथ साक्षात्कार में पंडितजी बताते है कि, "जब तक गाने में दर्द ना हों अर्थात सुरों में सिद्धि ना हो तब तक गाना हृदय तक पहुचता नहीं है | अर्थात गाने का कुछ भी असर नहीं दिखता | अतः **कलाकार** के पास **'सुरों की सिद्धि'** होना बहुत जरूरी है | उसी के साथ साथ, अपना गाना स्वयं को पसंद होना, असरदार होना, दर्दीला होना जरूरी है तभी वो दूसरों पर असर करेगा |"[13]

---

[10] भाटे आनंद, दूरध्वनी से साक्षात्कार, दिसंबर 8,2020

[11] पंडित भीमसेन जोशी साक्षात्कार- अशोक दा रानडे. सङ्गीतवेद(जून 5,2016)
https://www.youtube.com/watch?v=mzfD5UlMtlQ&t=412s

[12] गुलजार. फिल्म्स डिवीजन, अ बईओग्राफीकल फिल्म ओन भीमसेन जोशी
https://www.youtube.com/watch?v=cip5Q6fadNI

[13] हितेन पंचाल, भारतरत्न पंडित भीमसेन जोशी ओन सिद्धि एलबम,
https://www.youtube.com/watch?v=Y0IUqRg8shU

भीमसेन जी द्वारा, अपने गुरु की स्मृति में 1953 से शुरू किये गए 'सवाई गंधर्व मोहोत्सव' (हर साल दिसंबर महीने के दूसरे सप्ताह में तीन दिन चलनेवाले) में, 2005 के शतक में अपने स्वास्थ्य में रहनेवाले उतार चढ़ाव के कारण वे स्वयं गा न सके | उसी समय काल में उनकी पत्नी का भी देहांत हुआ था जिसका सदमा उन्हे लगा था | तत् पश्चात पंडित जी पूर्ववत कभी नहीं हुए और 24 जनवरी 2011 के दिन यह 'ऋषितुल्य स्वराधीश – भारतरत्न' पंचमहाभूतों में विलीन हो गए; परंतु उनके स्वरों के माध्यम से वे आज भी सभी के हृदय में बसे है और हमेशा रहेंगे |

3.2 पंडित कुमार गंधर्व (ई. स. 1924 - ई. स. 1992)

8 अप्रैल 1924 को, कर्नाटक के बेलगाव के पास सुलेभावी गाँव में, संगीत के क्षितिज पर शिवपुत्रा सिद्रामैय्या कोमकली नामक एक तेजस्वी तारा उदित हुआ | यह बच्चा सात साल का हुआ फिर भी उसे पढ़ाई में रस नहीं था | परंतु सरस्वती का वरद हस्त लिए जन्मा यह प्रतिभावंत बालक, उस समय के संगीत के महान गायक ओंकारनाथ ठाकुर, फैय्याझ खाँ, मँजी खाँ आदि की गायकी की हूबहू नकल करके श्रोताओं को अचंभित करता था| कोमकली कुटुंब के कुलगुरु' शांतिवीर स्वामी' ने एकबार इस बालक का गायन सुना और वे इतने मंत्रमुग्ध रहे गए कि, उन्होंने **"कुमारगंधर्व"** यह उपाधि की नक्काशी किया हुआ **'सुवर्ण' पदक** इस बच्चे को बक्षीश दिया | तब से शिवपुत्र को लोग 'कुमार' या 'कुमारगंधर्व' कहेने लगे | सात साल की उम्र से ही इस बालक ने संगीत के जलसे करना शुरू किया और 12 साल की उम्र में, दिनांक 2 मार्च 1936 में मुंबई के जीना हॉल में हुआ इस किशोर का कार्यक्रम इतना अधिक प्रभावी रहा कि,

टाइम्स ऑफ इंडिया में – कुमार एक अलौकिक प्रतिभाशाली बालक है, उसके गले की गोलाई असामान्य है, जिसके द्वारा कोई भी मुश्किल हरकत वो आसानी से निकाल सकता है,[14] ऐसी खबर छपी |

16 साल की उम्र से, एक अद्वितीय गुरु प्राध्यापक बी. आर. देवधर जी से; उन्हीकी म्यूजिक स्कूल में कुमार जी की संगीत की विधिवत तालिम शुरू हुई | अपने गुरु की विद्या तो कुमार जी ने अच्छे से आत्मसात कर ली, किन्तु उनकी प्रतिभा देखकर देवधर जी उन्हे अलग अलग गुरुओं के पास विशेष गायकी सीखने हेतु ले गए | कुमार जी ने; कृष्णराव मुझूमदार से 'तराना', पं राजाभैया पूछवाले से 'टप्पा' और पं अण्णासाहेब रातंजनकर से 'नए राग' एवं 'बंदीशे' सीखी और इन पर मनन चिंतन करके अपनी स्वतंत्र शैली का आविष्कार किया |

एक कलाकार के रूप में अलग अलग शहरों में कुमार जी के लोकप्रिय कार्यक्रमों का सिलसिला शुरू था और इस बीच देवधर जी, ने कुमार जी को संगीत के अध्यापन की जिम्मेदारी सौंपी | पश्चात, इसी सिलसिले में, कुमार जी का गायन सुनकर मुग्ध हुई उनकी भावी पत्नी, भानुमती जी ने, संगीत सीखने के उद्देश्य से कुमार जी से भेट की; संगीत के साथ आपस में प्रेम निर्माण हुआ और 24 अप्रैल 1947 को दोनों विवाह बद्ध हो गए | शिष्या एवं प्रिय पत्नी के रूप में भानुमती जी का साथ होने से, कुमार जी के संगीत जलसे लोगों को और अधिक मंत्रमुग्ध करने लगे | किन्तु कुछ ही काल बाद, कलकत्ता के कार्यक्रम के दौरान हुई अस्वस्थता के निदानानुसार कुमार जी क्षय रोग से ग्रसित हुए और कुछ महीने अस्पताल में रहने के बाद; मुंबई की तुलना में देवास का वातावरण सुखा होनेसे, डाक्टर ने उन्हे देवास में रहनेकी सलाह दी | कुमार जी बीमारी के कारण शय्याग्रस्त थे परंतु उनका मन पूर्ण रूप से संगीत से ही भरा था | देवास में उनके घर के आसपास **नाथ सम्प्रदायी साधू, फकीर तथा**

[14]वाघमारे रमेश(2018). *हिन्दुस्तानी रागदारी संगीतातील सुवर्ण युगाचे मानकरी.* (प्रथम आवृति).मुंबई : ग्रंथाली प्रकाशन, पृष्ठ 98

आदिवासी लोग रहते थे | उन नाथ संप्रदायी साधुओं के भजन वे अक्सर सुना करते थे, तब **"रागों का उद्गम, धुन या लोकसंगीत से होता है"** अपने गुरुजी की इस मौलिक उक्ति का अहसास उन्हे हुआ तथा लोकसंगीत को सुनते सुनते, उन्होंने कई नूतन राग एवं बंदिशों की निर्मिती कर अपने संगीत को एक नया मोड दिया |[15]

तीन साल बाद स्वास्थ्य में सुधार आनेपर , इन्ही धुनों एवं भजनों को वे बाहर बस्तियों में जाकर, छुपकर सुनते और उसके शब्द तथा नोटैशन लिख लेते | इस प्रकार से शास्त्रीय संगीत के ख्याल, ठुमरी, टप्पा, तराना इत्यादि अंगों के साथ साथ कुमार जी ने इन धुनों या भजनों को गाना प्रारंभ किया | सामान्यतः शास्त्रीय संगीत गानेवाले कलाकार 'राग' के उपर आधारित भजन गाते है| परंतु कुमारजी ने लोकसंगीत के आधार पर गाए जानेवाले निर्गुणी भजनों का चयन करके, भजन गाने का ढंग ही बदल दिया | पूर्णतः स्वस्थ होने पर, पाँच - छह सालों के विचार मंथन बाद, नए सांगीतिक दर्शन के साथ जब कुमार जी गाने लगे; तब वे उतने अधिक लोकप्रिय रहे कि, लोगों ने उन्हे 'क्रांतिकारी', 'नवसर्जक' आदि उपाधियाँ प्रदान की |[16]

संगीत को और अधिक समृद्ध करने के लिए, जिंदगी के हर एक मोड़ पर अपनी जीवन प्रणाली को संगीतमय बनाते हुए कुमार जी ने 'गीत वर्षा' , 'गीत हेमंत' , 'गीत वसंत' , 'ऋतुराज महफ़िल', 'ठुमरी-टप्पा-तराना' , 'कबीर-सूरदास-मीरा यांच्या पदांचा त्रिवेणी' , 'मला उमजलेले बालगंधर्व' , 'मालवा की लोकधुने' , 'तांबे गीतरजनी' , 'तुलसीदास दर्शन' , 'गौड़ मल्हार दर्शन' , ' होरी दर्शन'

[15] वाघमारे रमेश(2018). *हिन्दुस्तानी रागदारी संगीतातील सुवर्ण युगाचे मानकरी.* (प्रथम आवृति). मुंबई : ग्रंथाली प्रकाशन, पृष्ठ 102

[16] आठवले वि रा(2008). *नादचिंतन.* मुंबई : संस्कार प्रकाशन. पृष्ठ 77

, 'तुकाराम दर्शन' , 'गांधी मल्हार' आदि विविध विषयाधारित संगीत संकल्पनाओं का सर्जन करके उनके यशस्वी कार्यक्रम किये |[17]

कुमार जी के संदर्भ मे, उन्ही के ज्येष्ठ शिष्य एवं संगीतज्ञ प. सत्यशील देशपांडे जी के साथ साक्षात्कार दरमियान उन्होंने बताया कि, " जिस काल में कुमारजी देवास में रहेते थे उस समय **निर्गुणी परंपरा** के एक साधू **'शीलनाथ'** महाराज देवास शहर से कुछ दूर रहते थे जहाँ धुनी भी थी| देवास के महाराज भी शीलनाथ महाराज के शिष्य थे | शीलनाथ महाराज के यहाँ प्रत्येक गुरुवार को भजन होता था और उस भजन मे गाने के लिए निर्गुणी परंपरा के कनफटे साधू वहाँ अवश्य आते थे | यहाँ गाएँ जाने वाले सारे भजन 'निर्गुणी' होते थे | **निर्गुणी** भजन में **'असीम' शांति** की अनुभूति होती थी जिससे आवाज मे **'शून्य'** निर्माण किया जाता था| इसी के साथ, निर्गुणी भजन में एक 'आत्मनिर्भरता' का भाव होता है | इन सभी चीजों का कुमार जी पर गहरा असर हुआ | इस निर्गुणी भजन से मिलनेवाली शांति एवं दिव्यानन्द की अनुभूति से प्रेरणा लेकर उन्होंने अपनी गायकी को एक निर्गुणी स्पर्श दिया |" अर्थात किसी से **कोई आर्जव नहीं बल्कि मै मेरे अंदर मस्त हूँ, आत्म निर्भर हूँ,** यह भाव कुमार जी ने अपने गायन में सम्मिलित किया |[18]

कुमारजी ने स्वयं निर्गुणी भजनों के बारे में दूरदर्शन के अलग अलग साक्षात्कारों में बताया है कि, "मै जब देवास में रहता था तब वहाँ 'शीलनाथ' महाराज रहते थे | उनके यहाँ नाथपंथी कनफटे -रातजागे साधू आते थे | शमशान इनकी पसंदीदा साधना स्थली थी और 'मै जागु मेरा सद्गुरु जागे, आलम् सारी सोएँ' इस तत्वज्ञान के आधार पर, रात के एकांत में वे भजन गाते थे | वे ऐसे **नाजुक सुर** लगाते थे कि, **दूर से सुनाई** देनेवाले परंतु **सहज स्वाभाविक**, जैसे **शून्य** में से आवाज निकाल रहे

[17] विजय जोगलेकर-धूमाले. दूरदर्शन सह्याद्री. प्रतिभा आणि प्रतिमा-12, पंडित कुमार गंधर्व https://www.youtube.com/watch?v=xceuwxipqzo

[18] देशपांडे सत्यशील, साक्षात्कार, दिसंबर 1, 2021

हो | मेरे घर के पास भी एक वृद्ध व्यक्ति रात के समय अपना फूटा इकतारा लेके भजन गाता रहता था | इन **भजनों को सुनके, मुझे इनके स्वरों का लगाव कुछ अलग ही महसूस हुआ और उसके बारे में मेरा चिंतन शुरू हुआ |**"[19]

दूरदर्शन के साथ और एक साक्षात्कार में पंडित जी ने बताया है कि, " सगुण याने दृश्यमान तथा निर्गुण याने जो 'अमूर्त' है अर्थात 'आत्मा' | अतः निर्गुण भजनों में, 'गुरु' की महत्ता तथा 'आत्मा' की उन्नति के चरणों का वर्णन होता है | अतः इसे गाते समय शब्द, स्वर एवं लय का उसके भाव से अनुकूल होना अत्यंत जरूरी है | और इसका अहेसास भी हमे उस निर्जनता में ही होता है | इन भजनों को बार बार सुननेसे पता चलता है कि इनके **शब्दोंच्चारण से 'नाद' की निर्मिती** होना आवश्यक है | अर्थात 'स्वर' के जरिए **'भाव एवं रस'** का निर्माण करनेकी इच्छा लेकर ही निर्गुण भजन गान करना उचित है |"[20]

दूरदर्शन सह्याद्री के साथ साक्षात्कार में पंडित जी कहेते है कि, " संगीत उस्फूर्त है अतः सहज स्वाभाविक गायकी की निर्मिती होनी जरूरी है | शिल्पकार जैसे मूर्ति को आकार देता है वैसे निर्गुणी भजन के प्रस्तुतीकरण में भी **'नादमय शब्दोंच्चार'** की निर्मिती होना अभिप्रेत होता है | अतः मै जब कबीर को गाता हु तब मै सिर्फ़ कबीर होता हूँ नहीं की मीरा या सूरदास | अर्थात भजन के गीत में छुपा गहरा भाव व्यक्त होना जरूरी है | और इस प्रकार से, **भाव व्यक्त होनेपर ही वो दिल को छू लेता है तथा हम उसके साथ एकरूप हो जाते है** |[21]

[19] सङ्गीतवेदा1. पंडित कुमार गंधर्व, अ क्रिएटिव जीनियस, पार्ट 3 https://www.youtube.com/watch?v=SLDeBrcSDf0

[20] संजय जलगावकर. पंडित कुमार गंधर्व, डॉकुमेंटरी टाइप विडिओ क्लिप https://www.youtube.com/watch?v=hpQXRQJiMMA

[21] विजय जोगलेकर-धूमाले. दूरदर्शन सह्याद्री. प्रतिभा आणि प्रतिमा-12, पंडित कुमार गंधर्व https://www.youtube.com/watch?v=xceuwxipqzo

संन्यासी श्री प. प. नृसिंह आश्रम स्वामीजी के साथ साक्षात्कार दरमियान उन्होंने बताया कि, "कुमारजी का गाना स्वामीजी ने कई बार सुना है | चामुंडा हिल्स के पास शक्तिपात योग के उनके आश्रम 'श्री विष्णुतीर्थ स्वामी न्यास सन्यास आश्रम' में जब उत्सव होता था तब कुमार जी अक्सर वहाँ आते थे और पाँच भजन अवश्य प्रस्तुत करते थे, जो मुख्यत: निर्गुणी भजन होते थे |" स्वामीजी आगे बताते है कि, "इन भजनों को गाते समय कुमार जी, भजनों से अभिप्रेत अर्थानुरूप शब्दों का ऐसे अनुकूल उच्चारण करते थे कि, सुनते समय मन में एक अलग सी **शांति** का भाव जरूर आता था परंतु इसके परे, **मनःचक्षु** के सामने कोई सगुण साकार मूर्ति बनती नहीं थी और सभी कुछ **केवल निराकार** ही होता था | कुमार जी को भी, इन भजनों के मंच प्रस्तुतीकरण दरमियान कुछ अलग 'भावानुभूति' का अहेसास हुवा था यह उन्होंने स्वयं ने कहा था |" स्वामीजी ने आगे कहा कि, " कई कलाकार भजन गाते है और वो मधुर ही लगते है किन्तु उनके गाने से कोई न कोई 'मूर्ति' आँखों के सामने साकार होती है | सिर्फ़ कुमार जी ऐसे प्रतिभा सम्पन्न कलाकार थे कि उनकी आवाज की तकनीक से निर्गुणी भजन की प्रस्तुति दरमियान हम श्रोताओं के अंत:करण पर कोई मूर्ति नहीं बनती थी, बस 'निर्गुण' की अनुभूति होती थी |"[22]

श्री राहुल देशपांडे, आज कि पीढ़ी के विख्यात युवा कलाकार भी कुमारजी की गायकी के पीछे पागल है | दूरदर्शन के साक्षात्कार में उन्होंने बताया है कि, " बचपन में उन्हे शास्त्रीय संगीत के प्रति जरा भी लगाव नहीं था बल्कि अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने के कारण उन्हे वैसा ही संगीत पसंद था| राहुल जी के दादा श्री वसंतराव देशपांडे जी तथा कुमार जी की दोस्ती के कारण पारिवारिक स्नेह होने से; 13 जनवरी 1992 को कुमारजी के निधन की वार्ता सुनकर राहुल जी बड़े बेचैन हो गए | पश्चात राहुल जी के पिताजी देवास हो आये तब कुमारजी की दो कॅसेट्स लेकर आयें उनमें से; राहुल जी ने एक कॅसेट बजाई, जिसमें "सुनता है गुरु ज्ञानी" यह भजन था और उसे सुनते ही कुमार जी की

[22] नृसिंह आश्रम स्वामी, साक्षात्कार, 15/10/21

गायकी पर पागल हो गए तथा दो सप्ताह तक उसे सुनकर कुमार जी के जैसी आवाज लगानेका निर्णय किया |"[23] इस प्रकार से अंग्रेजी गीत को पसंद करनेवाला युवा कलाकार भी कुमार जी के निर्गुणी भजन से मंत्र मुग्ध हो गया |

संगीत के बल पर, जीवन के अनेक संकटों के साथ धैर्य एवं आत्मविश्वास पूर्वक लड़ते हुए भी इस 'नवसर्जक' कलाकार को आखिर 12 जनवरी 1992 के दिन यमराज ने इस दुनिया से छिन लिया| कुमार जी का संगीत इस चराचर में व्याप्त है तथा उनके अपने पुत्र, पुत्री, पौत्र तथा शिष्य; उनकी संगीत परंपरा अच्छे से आगे बढा रहे है | फिर भी कुमारजी की कमी हमेशा महसूस होती है और भविष्य में भी होती रहेगी |

3.3 पंडित जितेंद्र अभिषेकी (ई. स. 1929 - ई. स. 1998)

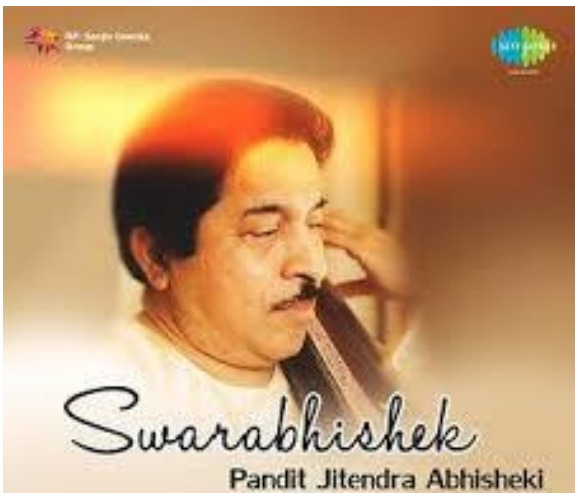

सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध, और भौगोलिक दृष्टि से लाल मिट्टी की खुशबू, हरी भरी वनश्री तथा सागर के आँचल में बसे 'गोवा' की भूमि पर, 21 सप्टेंबर 1929 में पद्मश्री पंडित जितेंद्र अभिषेकी का जन्म हुआ | पंडित जी का घर(हवेली) गोवा के ख्यातनाम 'मंगेशी' मंदिर से 100 मीटर के अन्तर पर है, जिसमे उनके पिता एवं चाचा का परिवार अगल बगल में रहता था | वैसे पंडित जी का कुलनाम 'नवाथे' था परंतु कई पीढ़ियों से(परदादा से) मंगेशी के मंदिर में पुरोहित रहकर भगवान 'मंगीरीश' के ऊपर अभिषेक करने से वह खानदान 'अभिषेकी' नाम से पहचाना जाने लगा

[23] रागगिरी. पंडित कुमार गंधर्व को याद कर रहे है राहुल देशपांडे. https://www.youtube.com/watch?v=Awy7JlkAeTY&t=5s

| पंडित जी के पिता 'बालूबुवा', शास्त्रीय संगीत के उत्तम अभ्यासक थे तथा गोवा के 'संस्कृत विद्वान' एवं 'ध्रुपद-धमार' गायक शंकरबुवा गोखले जी से उन्होंने शास्त्रीय संगीत की तालिम पाई थी | बालूबुवा का गला अत्यंत सुरीला था तथा 300-400 बंदिशे उन्हे मुखोद्गत थी | परंतु उस काल में संगीत को इतनी प्रतिष्ठा न होनेसे शास्त्रीय गायक बननेका विचार छोड़कर बालूबुवा उत्तम 'कीर्तनकार' बन गए| हर महीने में करीब 20 दिन उनके कीर्तन होते थे और उनमें से काफी कीर्तन मंगेशी मंदिर के विशाल प्रांगण में ही रहते थे| इसके अलावा उनकी कुलदेवी के मंदिर कोल्हापूर में तथा गोवा के आसपास के प्रदेशों मे भी वे कीर्तन प्रस्तुत करते थे | बालूबुवा अपने कीर्तन से लोगों को ऐसे मंत्रमुग्ध करते थे कि, उन्हे 'आदर्श कीर्तनकर' के नाते 'सुवर्णपदक' मिला था तथा पोर्तुगीज सरकार भी इन्हे हमेशा सम्मान देती थी |[24]

बालूबुवा अत्यंत विद्वान थे और वे सर्वकाल रागदारीका, कीर्तन का अध्ययन; धार्मिक पुस्तकोंका वाचन इसी में डूबे रहते थे | उन्होंने कई बंदिशे, पद, भजन आदि की रचनाओं का लेखन किया | पंडित(जितेंद्र) जी के ऊपर बाल्य काल से ही हुए पिता के सांगीतिक संस्कार के बारे में आकाशवाणी ,रत्नागिरी के साक्षात्कार में बताया है, कीर्तन प्रस्तुतीकरण में पिता के साथ मंजीरे बजाने के लिए पंडित जी बचपन से जाते ही थे तथापि शास्त्रीय संगीत के प्रति उन्हे प्राकृतिक रूप से ही लगाव था | मंगेशी मंदिर में हर रोज प्रातः पाँच बजे बजने वाला चौघड़ा सुनने के लिए पंडित जी बाल्यकाल से, नींद से उठकर मंदिर जाते थे और उन्होंने चौघड़ा बजाना भी सीख लिया था| **कीर्तन में पिता की संगत** में रहने से **झंपा, धूमाली, तेवरा, एकताल, दादरा जैसे ताल** तथा कीर्तन में गाए जानेवाले **ध्रुपद सदृश**

[24] दरेकर मोहन(2010). *माझे जीवन गाणे.* पुणे :मधुश्री प्रकाशन. पृष्ठ 20

गीत, अभंग, पंचपदी(पाच राग युक्त गीत) आदि पंडित जी के बाल मानस पर अच्छे से अंकित हो गए |[25]

इसके उपरांत समय समय पर बालूबुवा अपने बच्चों को विशुद्ध शास्त्रीय संगीत की तालिम देते थे | करीब पाँच सात साल पिता के पास घर के बच्चों की तालिम हुई जिसमे पंडित जी (जितेंद्र) का गायन निखर आया | उनकी प्रतिभा देखकर, विधिवत तालिम के लिए बालूबुवा ने उन्हे गिरिजाबाई केलेकर के पास भेजा | गिरिजा बाई के गाँव में महालक्ष्मी मंदिर था, जिस मंदिर मे अनेक बड़े बड़े कलाकार अपनी कला प्रस्तुत करने आते थे | उन्हे प्रत्यक्ष रूप से सुनकर पंडित जी के मनमें शास्त्रीय संगीत के प्रति ज्ञानलालसा अधिक बढ़ गई और वे गोवा छोड़ कर 'पुणे' में दाखिल हुए तथा उदर निर्वाह के लिए भिक्षा माँग कर भी अपनी संगीत साधना जारी रखी| पुणे में व्ही डी पलूसकर जी के शिष्य गोविंदराव देसाई जी के पास, पश्चात भास्कर बुवा के शिष्य नरहरबुवा पाटणकर के पास तथा यशवंतबुवा मराठे के पास से पंडितजी ने ज्ञान अर्जित किया| तत् पश्चात कॉलेज का एक वर्ष पूरा करके पंडित जी गायन सीखने के उदेश्य से मुंबई आये | मुंबई आकाशवाणी के 'कोंकणी' विभाग में काम करना शुरू किया और उसी दौरान खुर्जा घराने के उस्ताद 'अझमत हुसेन खाँ' साहब से पंडितजी का परिचय हुआ और अल्प काल के लिए, खाँ साहब के पास तालिम शरु हुई परंतु कुछ समय पश्चात यह तालिम बंद हो गई | उस काल दरमियान, श्रेष्ठ **गायक एवं गुरु पंडित जगन्नाथ बुवा पुरोहित** कोल्हापूर से मुंबई में आये और उनके पास वापस एकबार पंडित जी तालिम शुरू हुई, यह तालिम करीब 9 वर्ष चली | स्वतः के आवाज को पहचान कर गाना, घराने की संकुचित परंपरा से परे सोचना, बंदिश की रचना करना इत्यादि महत्वपूर्ण शिक्षण पंडितजी ने गुरु जगन्नाथ बुवा से लिया | पंडित जी में विद्यार्थी वृत्ती भरी होने से, जयपुर घराने के अलादियाँ खाँ साहब से करीब 25 वर्ष तालिम पायें

[25] पं जितेंद्र अभिषेकी अर्काइवल्स.(1993) पंडित जितेंद्र अभिषेकी – मुलाखत (आकाशवाणी,रत्नागिरी) बाय यशवंत क्षीरसागर https://www.youtube.com/watch?v=YWki1Zn8CYA

हुए और मुंबई में रहेनेवाले 'गुल्लुभाई जसदनवाला' से भी पंडित जी ने सीखनेकी चाह रखी | वृद्धत्व के कारण गुल्लुभाई को कुछ समस्या होने के बावजूद भी जयपुर गायकी का अंग सीखने की वांछा से, पंडित जी ने कठिनाईयों का सामना करके उनसे भी तालिम हाँसील की |

पंडित जी ने कई गुरुओं से तालिम ली परंतु किसी भी गुरु का अनुकरण नहीं किया | हर एक गुरु के पास से कुछ ना कुछ लेकर पंडित जी ने अपनी एक स्वतंत्र शैली बनाई जिसमें राग का 'रस एवं सौन्दर्य' अबाधित रहता था | वे हमेशा कहेते थे कि, स्वयं के गले के अनुसार जो उचित लगे वही गाना चाहिए | पंडित जी की गायकी में पतियाला एवं किराना घराने की आलापी तथा लय, आगरा घराने की राग विस्तार शैली, किराना घराने के समान एक एक स्वर को लेते हुए विस्तार, जयपुर ढंग से तान, जयपुर के अनवट रागों का गायन आदि दिखाई देता है |[26]

पंडित अभिषेकी जी की बुद्धिमत्ता अत्यंत प्रगल्भ थी | उत्तम गायक होने के साथ साथ वे श्रेष्ठ 'वाग्येकार' थे | एक साक्षात्कार मे पंडित जी ने कहा है की, " गुलाब कैसे खिलता है वो बताना मुश्किल है वैसे ही उत्तम रचनाकार कैसे बनता है वह भी.. हजारो बंदिशे कंठस्थ होने पर एक दो उत्तम रचना बन सकती है जिसके लिए गहरे अध्ययन की जरूरत होती है |"[27]

उनके जीवनकाल दरमियान उन्होंने पचास से साँठ बंदिशोंकी रचना की | निरंतर रियाज़, एवं मनन चिंतन करके, स्वर की एवं राग की कुछ अनुभूति होने के बाद ही पंडित जी बंदिश की रचना करते थे | महराष्ट्रीयन संस्कृति की 'जान' समान **मराठी नाटक एवं नाट्य संगीत** करीब करीब समाप्त होने के पथ पर था तभी पंडित जी ने क्रांतिकारी कदम उठाकर सन् 1964 में 'संगीत मत्स्यगंधा' से शुरुआत करके संगीत नाटक को पुनरुज्जीवित किया और पश्चात करीब 17 संगीत नाटकों का संगीत

[26] दरेकर मोहन(2010). माझे जीवन गाणे. पुणे : मधुश्री प्रकाशन. पृष्ठ 83-84

[27] पं जितेंद्र अभिषेकी अर्काइवल्स.(1993) पंडित जितेंद्र अभिषेकी – मुलाखत (आकाशवाणी,रत्नागिरी) बाय यशवंत क्षीरसागर https://www.youtube.com/watch?v=YWki1Zn8CYA

दिग्दर्शन करके उनके गीतों को अमर किया | पंडित जी को संस्कृत, मराठी, हिन्दी, उर्दू, इंग्लिश, तथा गोवा में रहेने के कारण कोंकणी एवं पोर्तुगीज भाषा अवगत थी |

अपने गुरु के चरणों में सदा समर्पित ऐसे, पंडित जी के जेष्ठ शिष्य श्री अजित कड़कड़े जी ने साक्षात्कार में पंडित जी के बारे में बताया कि, "बुवा, प्रत्येक संत रचना के 'शब्द' एवं तदनुरूप 'भाव' को आत्मसात करके संगीतबद्ध करते थे तथा उसे प्रस्तुत करते समय **'शास्त्रीय गायकी अंग'** से तथापि पूरी तरह **'भक्तिरस'** में डूबकर; रचना को श्रोताओं के हृदय पर अंकित करते थे | संत रचनाओं का प्रस्तुतिकरण महफ़िल में वे कई बार करते थे किन्तु, अपने **जीवन के संध्याकाल में, 'भक्तिरचना' प्रस्तुत करनेका बुवा झुकाव विशेष बढ़ गया था** | अभिषेकी बुवा ईश्वर के प्रति श्रद्धावान होते हुए भी, पारंपारिक पूजा-पाठ के अतिरिक्त; 'संगीत' ही उनकी साधना, भक्ति, पूजा-अर्चना, जप-तप था | अतः बुवा के संगीत में **'ज्ञान' आर 'भक्ति'** का अपूर्व संगम दिखाई पड़ता था |[28]

अभिषेकी जी को 'भक्ति गीत' तथा 'संत साहित्य' से विशेष लगाव था | पंडित जी ने, कवि मंगेश पाड़गावकर, बा.भ. बोरकर, किशोर पाठक, प्रवीण दवणे, सुधीर मोघे आदि कवियों की कविताओं को संगीतबद्ध किया तथा कई कवियों के गीत तथा अभंगों को अपना स्वर दिया | पंडित जी का संत साहित्य का विशेष अध्ययन होने से संत रचनाओं के साहित्य को समझकर उन रचनाओं को संगीत बद्ध किया अतः सारी कृतियाँ अत्यंत लोकप्रिय हुई | अनेक महान कलाकारों के साथ वर्षों तक संवादिनी पर संगत करने वाले श्रीमान सुयोग कुंडलकर जी, अभिषेकी जी के बारे में बताते है कि, "पंडित जी ने शास्त्रीय संगीत का यथासांग प्रयोग करके, भक्ति संगीत के लिए अधिकतर उपयोग में न लिए गये परंतु भक्तिरचना के भावोचित; **'परमेश्वरी', 'सालग वराली', 'शुद्ध सारंग', 'मधमात सारंग', 'श्री', 'पूरिया धनाश्री', 'धानी'** जैसे रागों के माध्यम से तथा केवल भजनी ठेके के अलावा,

[28] कडकडे अजित, दूरध्वनी से साक्षात्कार, जनवरी 5, 2022

'अद्धा', 'कहेरवा', 'दादरा' तथा 'रुपक' आदि तालों के माध्यम से रचनाओं को संगीतबद्ध किया और सारी रचनाएँ अत्यंत लोकप्रिय हुई |"[29]

पंडित जी अंधश्रद्धा तथा जातिभेद के विरोधी होने से समाज के सभी वर्ग के संतों की; जैसे संत चोखा मेला, संत रोहिदास, संत रोहिला आदि की रचनाएं उन्होंने गाई | पंडित जी की ज्येष्ठ शिष्या श्रीमती देवकी पंडित बताती है कि, "पंडित जी के मतानुसार संतों ने अपनी 'ध्यानात्मक उच्च अवस्था' में साहित्य लिखा है अतः यह संत साहित्य 'रस एवं भाव' से ओतप्रोत होते हुए हमेशा ही उच्चतम है जिसे हमें केवल 'अनुकूल' राग तथा भाव से गाना है|"[30]

अभिषेकी जी के सुपुत्र शौनक जी अपने पिता के बारे में बताते है कि, " सारे संतों से तथा उनके साहित्य से पिताजी को खूब लगाव था | कबीर जी का साहित्य हिन्दी में है वो मराठी लोगों में प्रचलित हो इस हेतु से, ज्येष्ठ मराठी कवयत्रि श्रीमती शांता शेलके जी के साथ कबीर साहित्य का मराठी अनुवाद करने के बारेमें पिताजी ने चार घंटे बात की है |"[31]

1983 से पंडित जी के साथ रहने वाले ज्येष्ठ शिष्य डॉ मोहन दरेकर जी बताते है, " अभिषेकी बुवा हमेशा कहते थे की **रागदारी संगीत भी भक्ति भाव से युक्त** है और उसमें से भी भक्ति व्यक्त होती है क्योंकि रागदारी की बंदिशों में ज्यादातर ईश्वर के प्रति समर्पित भाव आता है या ईश्वर की लीलाओं का वर्णन आता है | कृष्ण बंदिशों में चाहे श्रृंगार भी हो तो भी वो भगवान के विषय में है और हम भक्तों के लिए उस ईश्वर लीला में एकरूप होना भक्ति है| अर्थात **भक्त और ईश्वर के बिच का दुवा संगीत है** |"[32]

---

[29] कुंडलकर सुयोग, दूरध्वनी से साक्षात्कार, जनवरी 1, 2022

[30]पंडित देवकी, दूरध्वनी से साक्षात्कार, मई 5, 2021

[31] माझा कट्टा. अेबीपी माझा, जेष्ठ गायक पं शौनक अभिषेकी माझा कट्टयावर गप्पांची सुरेल मैफिल https://www.youtube.com/watch?v=ZVFCCxBwpeE

[32] दरेकर मोहन, दूरध्वनी से साक्षात्कार, दिसंबर 10,2021

पंडित जी के बारे में डॉ. मोहन जी आगे बताते है कि, "बुवा जब कोई भी भक्ति रचना गाते थे तब उसे बड़ी आर्तता से गाते थे, उसमे पूरी तरह से खो जाते थे | **भजन के शब्दों में से बुवा ऐसी उत्कटता से व्यक्त होते कि वे स्वयं भी खुद के ना रहेते हुए भजन के भाव से एकरूप हो जाते थे तथा हम लोग भी एक प्रकार की भाव समाधि में चले जाते थे** |"[33]

पं भीमसेन जोशी जी अभिषेकी जी के लिए हमेशा कहते थे कि, " अभिषेकी बुवा सोच समज़ कर गानेवाले प्रतिभावान कलाकार है और हम में प्रतिभा नहीं है बल्कि हम तो केवल चिल्लाते है|"[34]

इस प्रकार से 1995 तक अभिषेकी जी अपनी प्रतिभा सम्पन्न, भाव पूर्ण गायकी का प्रस्तुतिकरण करते रहे | परंतु धीरे धीरे उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा | आँखे कमजोर हो गई, पूरा शरीर कमजोर होने लगा | जादा अस्वस्थ होने पर उन्हे अस्पताल में भर्ती कराने पर, "और मुझे बहुत काम करना है" यह कहेते थे | अंतिम समय में पंडित जी कोमा में थे परंतु उनकी देखभाल डॉक्टरों द्वारा उनके घर में ही की जाती थी और 7 नवंबर 1998 के दिन सुबह 11.15 को पंडित जी ने इस मृत्यु लोक से विदाय ली परंतु अपने सांगीतिक कार्य से वे हमेशा अमर रहेंगे |

[33] दरेकर मोहन, दूरध्वनी से साक्षात्कार, दिसंबर 10, 2021

[34] कामत भरत, साक्षात्कार, नवम्बर 30, 2021

3.4 पंडित जसराज (ई. स. 1930 - ई. स. 1920)

भारतीय अभिजात शास्त्रीय संगीत के संगीत मार्तंड - रसराज – पंडित जसराज का जन्म 28 जनवरी 1930 को हरियाणा के हिस्सार जिले के 'पीली मंदोरी' गाँव में हुआ था| उनके पिता पंडित मोतीराम 'मेवाती' घराने के उत्तम गायक एवं संगीतज्ञ थे | उनके दोनों भाई, बड़े मणिराम जी तथा मंझले पंडित प्रताप नारायण जी; घराने के कुशल गायक थे | अतः जसराज जी की रगों में संगीत भरा हुआ था और तीन साल की उम्र से ही पिता मोतीराम जी उन्हे संगीत की शिक्षा देते थे | इस सांगीतिक माहोल में पलते हुए, छोटी उम्र से जसराज जी का झुकाव तबले की ओर दिखाई देता था तथा वे अक्सर तबला बजाया करते थे| अतः उनके मंझले भाईसाब, पंडित प्रताप नारायण जी ने उन्हे तबले की शिक्षा देना प्रारंभ किया| 30 नवेंबर 1934 में जसराज जी के पिताजी पंडित मोतीराम जी, जिस दिन हैदराबाद स्टेट के 'राज्य संगीतकार' के पद पर नियुक्त हुए थे उसी दिन उनका देहांत हो गया | चार साल की छोटी उम्र में ही सर से पिता का साया उठ जानेसे से आर्थिक अड़चनों से निपटने के लिए, केवल सात साल की उम्र से, बड़े भैया मणिराम जी के कार्यक्रमों में जसराज जी अक्सर तबला संगत करते थे | आजादी पूर्व, लाहौर के एक कार्यक्रम में जसराज जी अपने भाई साहब के साथ तबला संगत करने के लिए गए थे, वहाँ कुमार गंधर्व जी अपने आकाशवाणी के गायन में संगत करने के लिए जसराज जी को लेकर गए, जहाँ कुमार जी ने 'भीमपलासी' गाया था तथा 'धैवत' पर सम रखी थी | इसके बारे में एक जेष्ठ गायक ने ऐतराज़ उठाया था | उस बात पर जब जसराज जी ने अपना मत प्रदर्शित किया,

तब उस कलाकार ने जसराज जी से कहा कि, **"तुम तो केवल मरा हुआ चमड़ा पीटते हो, तुम्हें सुरों से क्या मतलब!"**[35]

इस बात को सुनकर जसराज जी को बडा दु:ख हुआ | पश्चात एकबार 'नन्द महोत्सव' के दिन मणिराम जी का कार्यक्रम था जिसमें जसराज जी को तबला बजाना था | तबले वालों का आसन गायक कलाकार के संदर्भ मे कुछ नीचे था और उस के बारे में पूछने पर, **"तबला बजनेवाले की जगह अक्सर गानेवाले की तुलना में नीचे होती है"** ऐसा जवाब मिला | इस घटना से भी जसराज जी दु:खी हुए | उपरोक्त **दो घटनाओं** के काराण जसराज जी **तबला बजाने के प्रति नाराज** हुए |[36] इसी के साथ साथ जब वे 6 साल के थे तब, इनके स्कूल जाने के रास्ते के एक होटल में **बेगम अख्तर** जी की एक रिकार्ड बजती थी – 'दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे, वरना कही तकदीर का तमाशा ना बना दे |' इस गीत का तत्वज्ञान समझ पाने की पंडित जी उम्र नहीं थी परंतु बेगम जी की आवाज पर ऐसे **मुग्ध हुए** कि, स्कूल जाने के बहाने वे रोज वही होटल में पहुँच जाते और रिकार्ड सुनते रहते| उपरोक्त दो घटनाएं तथा बेगम अख्तर जी की आवाज के प्रभाव से उन्होंने तबला बजाना छोड़कर गायक बननेका निर्णय किया |[37]

तत् पश्चात बड़े भाई साहब पंडित मणिराम जी से जसराज जी की संगीत की तालिम शुरू हुई | पश्चात उन्होंने मेवाती घराने के महाराज 'जयवंत सिंह वाघेला' और आगरा के 'स्वामी वल्लभ दास' जी से भी संगीत की शिक्षा ली |

[35] ET Now, Dec 11,2017. Padma Vibhushan Pandit Jasraj In An Exclusive Interview / My Story https://www.youtube.com/watch?v=fMGq1ZcX3-0
[36]ET Now, Dec 11,2017. Padma Vibhushan Pandit Jasraj In An Exclusive Interview / My Story https://www.youtube.com/watch?v=fMGq1ZcX3-0
[37] The wire, The God in My Music, Pandit Jasraj, in conversation with Karan Thapar https://www.youtube.com/watch?v=fMGq1ZcX3-0

पंडित जसराज जी का जिस **मेवाती** घराने में जन्म हुआ, यह संगीत का घराना **'भक्तिरस' प्रधान** है | इस घराने में 'बलमा', 'सैया', जैसे श्रृंगार वाचक शब्दों वाली बंदिशों का प्रयोग अधिकतर नहीं होता और अगर प्रयोग किया जाय तो इसे 'ईश्वर' के लिए किया जाता है | अर्थात वो **श्रृंगारिक भाव** कोई व्यक्ति के प्रति न होकर **'ईश्वर'** के प्रति होता है |[38]

जसराज जी ने भी अपने साक्षात्कार में बताया है कि, " **सुरों को अत्यधिक प्यार करना और भगवान के लिए गाना यह हमारे मेवाती घराने का "ट्रेड-मार्क" है** |"[39]

अपने गुरु पंडित जसराज जी के भक्तिमय होने की पार्श्वभूमी के बारे में श्री नीरज परिख जी ने बताया कि, " गुरुजी 14 साल के थे तब बड़े भाई मणिराम जी की आवाज अचानक से ऐसी खराब हो गई कि बोलना भी कठिन था | गले पर इलेक्ट्रिक शॉक लेकर जादा से जादा 45 मिनट गा सकते थे | इसी परिस्थिति में मणिराम जी का अहेमदाबाद में कार्यक्रम था तब करीब 40-45 मीनट के बाद आवाज बंद हो गई | मणिराम जी की हालत देखकर, कार्यक्रम के आयोजक ऍडवोकेट वमानराव धोलकिया ने उन्हे 'सानंद के ठाकुर साहब'(महाराज जयवंत सिंह जी) के पास जानेका अनुरोध किया और मणिराम जी के इनकार करने पर भी धोलकिया साहब ने उन्हे जबरदस्ती सानंद भेजा | वहाँ ठाकुर साहब से मिलने के बाद, मणिराम जी ने कुछ दिन रहनेका निर्णय किया | ठाकुर साहब काली माता के असीम भक्त थे | एक दिन उन्होंने मणिराम जी से कहा कि, "माता से मै आपकी आवाज के लिए अनुरोध करूँगा और अगर माँ ने नहीं दी तो मै अपना मंदिर उतार दूँगा |" ठाकुर साहब ने दूसरे ही दिन, शाम की पूजा के बाद मणिराम जी को नहाँ-धो कर, साफ वस्त्र पहनकर, अपना तानपूरा लेकर किसी एक भक्ति रचना की प्रस्तुति के लिए माँ के मंदिर मे बुलाया | मणिराम जी गए परंतु आवाज निकल नहीं रही थी | वे कोशिश कर रहे थे कि अचानक से एक ज़ोर का झटका लगा और

[38] परिख नीरज, साक्षात्कार, दिसंबर 7,2021

[39] News X. Art Talk : Pandit Jasraj(Classical Vocalist), Part 1of 2, By Jujhar Singh https://www.youtube.com/watch?v=1rhdpBp0nyw

ऐसी आवाज निकली कि, मणिराम जी 6 घंटों तक निरंतर गाते रहे | छोटे जसराज जी तो कई बार तबला बजाते बजाते तबले के ऊपर ही सो जाते थे पर मणिराम जी रुकते नहीं थे | तब से **'ठाकुर साहब' इस कुटुंब के आध्यात्मिक गुरु तथा 'सानंद' तीरथ बन गया |**"[40]

जसराज जी ने अनुराधा पौडवाल जी के साथ साक्षात्कार में कहा है कि, " सानंद बापू, जो मेरे स्परिचुल गुरु थे उन्होंने मुझे संगीत में भक्ति और काव्य की शक्ति से परिचित करवाया |[41]

नीरज जी ने आगे बताया कि, "पश्चात 1980 में मुंबई में गुरुजी की, वैष्णव धर्म के **पुष्टिमार्गीय संप्रदाय के गुरु, 'श्याम मनोहर गोस्वामी'** जी से भेट हुई | उनके मार्गदर्शन में गुरुजीने **'हवेली संगीत' की कई बंदिशे संगीतबद्ध** की| उनपर व्यापक अनुसंधान और विचार मंथन करके गुरुजी के स्वर में जब "सुर पदावली" नामक सीडी की निर्मिती हुई तब वह इतनी लोकप्रिय रही कि, गुरुजी का जीवन और ज्यादा भक्ति रस से भर गया |[42]

नीरज जी, 1980 में जसराज जी से गंडा बँधवाया तबसे उनके साथ रहे| जसराज जी के साथ पूरे भारत में और विदेशों में घूमे है और गुरुकुल में रहते है उसी प्रकार से गुरु के घर रहकर संगीत की साधना की | वे कहते है कि, " गुरुजी की सभी मंच प्रस्तुतियाँ भावोत्कट रहती थी | परंतु उनमें से भी कुछ विशेष होती थी | ऐसा ही एक कार्यक्रम कलकत्ता के बिरला मंदिर में था | मै गुरुजी के पीछे तानपूरा बजा रहा था और गुरुजी "चक्र के धरणहार, गरुड के असवार, मेरो संकट निवार...." यह शांत रस भैरवी गा रहे थे | तब अचानक से मुझे, गरुड पर विराजमान होकर साक्षात भगवान आ रहे है ऐसा दृश्य दिखा | मेरा हात तानपुरे पर स्थिर हो गया, **आखों से अविरत अश्रुधारा** बहेने लगी और कुछ **पलों तक मैने 'भगवान' के दर्शन** किये | गुरुजी ने पीछे देखा, वे समझ गए | कार्यक्रम पूर्ण

[40] परिख नीरज, साक्षात्कार, दिसंबर 7,2021

[41] वृंदावन गुरुकुल, पं हरिप्रसाद चौरसिया. साधना – पं जसराज. https://www.youtube.com/watch?v=kXyCqf47nEU

[42]परिख नीरज, साक्षात्कार, दिसंबर 7,2021

होने पर अंदर जाकर मै गुरुजी के कदमों में गिर पड़ा तब गुरुजी इतनाही बोले कि 'मुझे मालूम है' |"[43]

जसराज जी ने अपने भक्तिरस प्रधान संगीत के बारे में दूरदर्शन के साथ साक्षात्कार में स्वयं कहा था कि, " मेरे बड़े भाई एवं गुरु मणिराम जी, सानंद बापू और स्वामी वल्लभदास जी तीनों का प्रभाव मेरे गाने पर है |" [44]

जसराज जी को अपनी वैदिक भाषा - संस्कृत तथा उसके साहित्य से अत्याधिक लगाव था | उन्होंने 'मांडूक्य उपनिषद', 'छान्दोग्य उपनिषद', से कुछ रचनाएँ संगीत बद्ध की है | इसके अलावा 'निर्वाण षटकम्' , 'शिवाष्टक', 'मधुराष्टक' इत्यादि उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ है| | वे 'गंगा लहेरी" स्तोत्र का अंतिम श्लोक शंकरा राग की तथा 'वाल्मीकि रामायण' का श्लोक भटियार राग की बंदिश के रूप में गाते थे |[45]

जसराज जी ने अपने कई साक्षात्कारों में कहा है कि, **भगवान कृष्ण** हमेशा उनके सपने में आकर **सांगीतिक मार्गदर्शन** देते थे | इस संदर्भ में कई बार उन्होंने आधी रात को, अपनी धर्म पत्नी मधुरा जी को जगा कर सपने में भगवान ने बताएं नोटेशन को लिखवाया है | एक साक्षात्कार का उन्होंने जिक्र किया है कि, " 1946 में **भगवान कृष्ण बालक** रूप में मेरे सपने में आये और मुझे बोले कि, **जसराज तुम जो गाना गाते हो वो मुझे जल्दी पहूँचता है अतः तुम गाओ** |"[46]

जसराज जी के शिष्य संजय अभ्यंकर जी अपने गुरुजी के बारे में कहेते है कि, " गुरुजी ध्रुव तारे के समान है अर्थात अवकाश में **ध्रुवतारा एक** ही होता है वैसे ही गुरुजी जैसा दूसरा कोई नहीं

[43] परिख नीरज, साक्षात्कार, दिसंबर 7,2021

[44] वृंदावन गुरुकुल, पं हरिप्रसाद चौरसिया. साधना – पं जसराज. https://www.youtube.com/watch?v=kXyCqf47nEU

[45] परिख नीरज, साक्षात्कार, दिसंबर 7,2021

[46] News X. Art Talk : Pandit Jasraj(Classical Vocalist), Part 1of 2, By Jujhar Singh https://www.youtube.com/watch?v=1rhdpBp0nyw

है| गुरुजी, **राग के भाव को जागृत करके उसके साथ एकरूप होकर भाव समाधि में जाते थे** | राग को जीवित करके उसके भाव का सुंदर चित्र तैयार करते थे |"[47]

श्रीमती श्रुति काले, जिन्होंने 3 वर्ष तक जसराज जी के पास तालिम ली, वो अपने गुरुजी के बारे में बताती है कि, "गुरुजी के **संगीत की संकल्पना आध्यात्मिक** थी | हमे सीखाते हुए, गायन की शुरुआत हमेशा 'अनंत हरी' से करनेका अनुरोध किया करते थे और उनकी आलापी भी आकार युक्त ना होकर 'ओमकार' युक्त होती थी | गुरुजी हमेशा भक्तिभाव से ओतप्रोत रहेते थे | उनके स्वरमण्डल पर काली माता, कृष्ण, उनके सांगीतिक गुरु, आध्यात्मिक गुरु आदि सबके फोटो रहते थे और मंच प्रस्तुति करण से पहेले उनकी अंत:करण पूर्वक प्रार्थना करने के बाद ही परदा खुलता था | कार्यक्रमों के लिए हम जहाँ कही भी जाते थे, जैसे बनारस, कोल्हापूर, तुलजापुर आदि सभी स्थानों पर हम जब मंदिरों में दर्शन करने जाते थे तब भगवान की सेवा में गुरुजी पांच से दस मिनट 'भजन' जरूर प्रस्तुत करते थे | मंच प्रस्तुतिकरण में गुरुजी के पीछे बैठकर तानपूरा बजाने के कई अवसर मुझे प्राप्त हुए है | सभी महफ़िले अद्वितीय होती थी | फिर भी कई बार, तानपूरा बजाते बजाते **मै ऐसे मंत्रमुग्ध हो जाती** थी कि, किसी और ही दुनिया मे होनेका आभास होता था; उस वक्त **हात रुक जाता था और आँख भर** आती थी | गुरुजी ने मुझे जब 'काली माता' की रचना सिखाई तब माता के भक्तिभाव में मै ऐसी डूब गई कि, रात को सपने में भी गुरुजी के साथ माता के मंदिर में परिक्रमा करते हुए, यही रचना का और अधिक विस्तार करके गुरुजी मुझे आगे सिखा रहे है ऐसा आभास हुआ |"[48]

जसराज जी के भक्ति पूर्ण राग संगीत के कई चमत्कार है जो यु ट्यूब के साक्षात्कारों में है तथा नीरज जी ने साक्षात्कार दरमियान बताए है |

[47] Raaggiri. Pt Sanjeev Abhyankar remembering his GURU Padma Vibhushan Pt Jasraj Jee / EXCLUSIVE INTERVIEW. https://www.youtube.com/watch?v=mo3IlJphyr8

[48] काले श्रुति, दूरध्वनी से साक्षात्कार, अगस्त 3,2021

"1987 में बनारस में संकट मोचन हनुमान मंदिर में पूरी रात कार्यक्रम चल रहा था | प्रातःकाल में जसराज जी 'तोडी' गा रहे थे | तब 5-6 हजार लोगों के बीच एक हिरन आकर खडा रहा |"

"एडमिंटन के कार्यक्रम में किसीने गुरुजी से **'अल्ला महेरबान'** बंदिश गाने के लिए अनुरोध किया | पंडित जी ने गाना शुरू किया और कुछ पलों के लिए वे एकाएक आंतर्मुख हो गए | जब होंश में आये तब पता चला कि वे **"अल्ला -ओम" गा रहे है और दोनों का उद्गम नाभी से हो रहा है |**"

"गुरुजी जब **कृष्ण के बारे में गाते थे** तब कई बार उनकी आखों के सामने जैसे 70 mm के परदे पर 'क्या प्रस्तुत करना है' वो दिख जाता था |"[49]

"पंडित जी कहेते थे कि, **शब्द समझ कर गाने से ही अर्थोंचित आवश्यक भाव कलाकार के मन में आता है अतः श्रोताओं के मन में भी आता है और तब वे भी कुछ अलग अनुभूति कर सकते है |**"

"पंडित जी ने 'मूर्छना' की प्राचीन शैली पर **"जसरंगी"** नामक एक अनोखी जुगलबंदी की निर्मिती की | जिसमें एक महिला और एक पुरुष अपने अपने सुर में तथा दो भिन्न रागों को एकसाथ गाते है |"[50]

जसराज जी पहले भारतीय कलाकार है, जिन्होंने **'सातों महा द्वीपों'** पर अपने संगीत का प्रस्तुतीकरण किया | इस प्रस्तुति के बारे में जानकारी देते हुए जसराज जी की ज्येष्ठ शिष्या श्रीमती ज्योति मुखर्जी ने बताया कि, "8 जनवरी 2012 को **अंटार्कटिका में 'सी स्प्रिट' नामक क्रूज** पर कार्यक्रम था | आन्टार्टीका में उतरनेकी कोई जगह ना होने से 100 लोगों के एक छोटे जहाज में

[49] परिख नीरज, साक्षात्कार, दिसंबर 7,2021

[50] परिख नीरज, साक्षात्कार, दिसंबर 7,2021

गुरुजी ने अपना प्रस्तुतीकरण किया | और **आर्कटिक महासागर में गुरु पूर्णिमा के दिन (उत्तर ध्रुव, अलास्का की तरफ से) सुबह 9.30 के आसपास समुद्र में घुटनों तक पानी में खड़े रहेकर सूर्य की आराधना की** |"[51]

इस प्रकार, अपनी 90 साल की आयु तक जसराज जी, अभिजात संगीत की सेवा करके जन सामान्य को अपने संगीत से 'आत्मानंद' की अनुभूति देते रहे | जसराज जी को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया जिनमें से सन् 2000 में मिला "पद्म विभूषण" सर्वश्रेष्ठ है | सन् 2006 में नासा तथा इंटरनेशनल ऐस्ट्रोनॉमिकल यूनियन ने 'बृहस्पति' और 'मंगल' के बीच **300128 'पंडित जसराज'** नामक **क्षुद्र ग्रह (asteroid)** अवकाश में रखा |[52] भारतीय शास्त्रीय संगीत को अत्युच्च आयामों पर ले जाने वाले इस कलाकार को आखिर भगवान ने बुला ही लिया और 17 अगस्त 1920 में संगीत मार्तंड पंडित जसराज पंच महाभूतों में विलीन हो गए |

3.5 गानसरस्वती किशोरी आमोणकर (ई. स. 1931 - ई. स. 1992)

पद्मविभूषण किशोरी आमोणकर जी अभिजात भारतीय शास्त्रीय संगीतकी प्रतिनिधि एवं अग्रणी कलाकारों में सें एक थी| किशोरी ताई का जन्म 10अप्रैल 1931 में मुंबई में हुआ था| उनकी माता श्रीमती मोगूबाई कर्डीकर के गुरु, उस्ताद अल्लादिया खाँ साहब जब उन्हे गाना सीखाते थे तब छोटी किशोरी ताई अपनी माता की गोदी में

[51] DD News (August 22, 2020). Vaartavali: Memorable Interview with Pandit Jasraj https://www.youtube.com/watch?v=TZwS6sOKNCw&t=3s

[52] HW News English NASA names a minor planet after pandit Jasraj, first Indian to receive this honour https://www.youtube.com/watch?v=FEwyLrWPyHE

बैठती थी| माता के डांटने पर खाँ साहब कहते थे कि, "मोगू उसे प्यार से समझाओ, एक दिन वो तुमसे भी बड़ी होगी |"[53] अर्थात बाल्यकाल से ही किशोरी ताई संगीत के संस्कार एवं माहोल में पली बड़ी थी |

प्रत्येक बच्चे की प्रथम गुरु उसकी माता होती है उसीप्रकार से ताई ने शास्त्रीय संगीत की मूलभूत शिक्षा के साथ साथ लयकारी, तान, बोलबाट आदि को अपनी माता से ही आत्मसात किया था | तथापि माता से विरासत में मिली विशुद्ध जयपुर गायकी उन्हे सम्पूर्ण रूप से स्वीकार्य नहीं थी | क्योंकि वे स्वयं सौन्दर्य की पुजारिन होने से किसी एक ही घराने को चिपके रहकर अन्य घरानों के सौन्दर्य का विरोध करना, संगीत के विकास में बाधक समझती थी | **'राग'** को वे शास्त्रीय संगीत का **'चैतन्य'** मानती थी और राग का वो **चैतन्यमयी स्वरूप** श्रोताओं के सामने प्रकट करना ही उनके **महफ़िल का लक्ष्य** रहेता था | अतः वे राग के 'भाव' को केंद्र में रखकर, एक एक स्वर का सौन्दर्यपूर्ण प्रयोग करते हुए रागालापी करती थी | इसके अलावा 'सास ननदिया' या 'चली सैयां के घर' आदि बंदिशे अगर राग के भाव से मिलती न हो तो वे 'राग के भावोचित' बंदिशे स्वयं बनाती थी |[54]

किशोरी ताई के जीवन पर आधारित, आमोल पालेकर जी द्वारा निर्मित "भिन्न षड्ज" फिल्म में ताई बताती है कि, उनके गले का प्रकार देखकर माता मोगूबाई ने ही उन्हे सुगम संगीत, गज़ल जैसे अलग अलग गीत प्रकार गाने के लिए उद्युक्त किया और उसे सीखने के लिए अलग अलग गुरुओं के पास भी भेजा | इसी संदर्भ में किशोरी ताई की पोती, तेजश्री आमोणकर ने 'कला कहानी' में अपने साक्षात्कार में बताया कि, किशोरी ताई की माता मोगूबाई ने ताई को संगीत सीखाने के लिए किसी शिक्षक को घर पर बुलाया | पहेले ही दिन की तालिम के बाद वह शिक्षक मोगूबाई को बोले

[53] वाघमारे रमेश(2018). *हिन्दुस्तानी रागदारी संगीतातील सुवर्ण युगाचे मानकरी.* (प्रथम आवृति). मुंबई : ग्रंथाली प्रकाशन, पृष्ठ 111

[54] वाघमारे रमेश(2018). *हिन्दुस्तानी रागदारी संगीतातील सुवर्ण युगाचे मानकरी.* (प्रथम आवृति). मुंबई : ग्रंथाली प्रकाशन, पृष्ठ 112

कि, "तुम्हारे बेटी की आवाज बिल्कुल पत्थर जैसी है तथा उसके गले में सें एक भी हरकत निकलती नहीं है |"[55] इस बात को सुनकर माता मोगूबाई ने स्वयं ही ताई की संगीत तालिम शुरू की |

बाल्यकाल से ही किशोरी ताई को चित्रपट संगीत पसंद था और इसी कारण से शांताराम जी के कहने पर उन्होंने **"गीत गया पत्थरों ने"** इस चित्रपट में शीर्षक गीत गाया था परंतु उसके विरोध में माता ने उनसे कहा कि, "जब तक तू फिल्म संगीत गाएगी तब तक मै तुझे मेरा तानपूरा छेड़ने नहीं दूँगी |" अतः उन्होंने फिल्मों में गाना छोड़ दिया परंतु फिर भी वे ऐसा जरूर मानती थी कि फिल्म संगीत सुननेसे ही उनके संगीत मे 'भाव' आया है |[56]

किशोरी ताई को अपने जीवनकाल दरमियान परिस्थिति से काफ़ी लड़ना पड़ा | लाड़- प्यार की छोटी उम्र में अर्थात वे छः साल की थी तब उनके पिताजी का देहान्त हो गया | तब ताई और उनके दो छोटे भाई बहन को अकेली माता ने ही उत्तम अनुशासन से पाला | ताई की उम्र के 45 वर्ष में उनकी आवाज चली गई | बोलने में भी कठिनाई होने के कारण उन्हे कागज कलम का इस्तमाल करना पड़ता था | करीब दस वर्ष तक इलाज करने के बाद वे पुनः गा सकी | इसी कालखंड में उनके पति राजयक्ष्मा से ग्रसित हुए और कई साल तक बीमार रहे | पर वे हमेशा कहती थी कि, "सर्व प्रथम मै एक सामान्य स्त्री हूँ; अपने बीमार पति, वयोवृद्ध माता एवं बच्चों की देखभाल करनेवाली एक गृहिणी हूँ |" इस प्रकार के अवरोधों के बावजूद भी संगीत के प्रति उनकी आस्था कम होने कि बजाय और भी द्रढ़ हो गई |[57]

---

[55] वाघमारे रमेश(2018). *हिन्दुस्तानी रागदारी संगीतातील सुवर्ण युगाचे मानकरी.* (प्रथम आवृति). मुंबई : ग्रंथाली प्रकाशन, , पृष्ठ 111

[56] वाघमारे रमेश(2018). *हिन्दुस्तानी रागदारी संगीतातील सुवर्ण युगाचे मानकरी.* (प्रथम आवृति). मुंबई : ग्रंथाली प्रकाशन, पृष्ठ 113

[57] बेडेकर नंदिनी, साक्षात्कार दिसंबर 20,2021

"भिन्न षडज्" फिल्म में ताई ने अपने गले की बीमारी के बारे में कहा है कि, **"आहत नाद से अनाहत नाद की ओंर** जाने के लिए यह भगवान की ही ऐसी योजना थी | उस समय काल दरमियान आवाज चली जाने से मै बाहर गा नहीं सकती थी अतः अंदर मन में गाने लगी और इसी वजह से मेरा **गाना बहुत जादा निखर आया** |"[58]

पंडित हरी प्रसाद चौरसिया द्वारा आयोजित "**वृंदावन बैठक** – अनुभव में किशोरी ताई भारतीय संगीत के बारे में कहती है कि, "केवल स्वर या स्वरों के मिलाप से बना राग याने भारतीय संगीत नहीं है | स्वर और राग तो भावों को व्यक्त करनेका 'माध्यम' है | माध्यम की आवश्यकता जरूर है परंतु माध्यम 'अंतिम' ध्येय नहीं है | अंतिम ध्येय तक पहुचने के लिए स्वर (जो केवल माध्यम है); **साधना करके जो रागनिर्मिती होगी उसमे से प्रकट हुआ 'भाव' ही हमारा सर्वोच्च लक्ष्य है** | इसलिए वे बताती थी कि, अगर हमे संगीत का अभ्यास करना है तो उसे एक विषय याने शास्त्र समझ कर अभ्यास करना जरूरी है | क्योंकि **किसी भी विषय का गहन अभ्यास हमे परम शांती का अहसास कराता है, जो मोक्ष की तरफ़ ले जाता है; ऐसी दृढ़ भारतीय धारणा है और इस धारणा को सिद्ध करने के लिए भारतीय शास्त्रीय संगीत उपयुक्त है** | अर्थात 'रंजयते इति रागः' इस धारणा से हम सोचें तो इसमे 'मनोरंजन' न होकर **'आत्मरंजन' ही उचित** लगता है | क्योंकि मंच प्रदर्शन में कलाकार की उस क्षण की सफलता या उपलब्धि अर्थात अलग अलग प्रकार की तथा अलग अलग लय में गाई हुई ताने, तिहाइयाँ जैसी गले की तैयारी से भारतीय संगीत का मकसद कतई सिद्ध नहीं हो सकता क्योंकि यह सबकुछ केवल क्षणिक मनोरंजन कर सकता है | परंतु इन सबसे परे जब उस **'नाद मे एकरूप' होकर हृदय से स्वर निकलते** है तब **श्रोतागण भी अपने सुख दुःख को भूलकर उस स्वर में**

[58] Indian Diplomacy Bhinna Shadja , A Film by Amol Palekar
https://www.youtube.com/watch?v=ppQlc3NjuMw

खो जाते है, ऐसा संगीत आत्म रंजक होता है और भारतीय शास्त्रीय संगीत के कलाकार से भी यही अपेक्षित होता है|"[59]

दूरदर्शन की सह्याद्री (मराठी) के साक्षात्कार में किशोरी ताई कहती है कि, "भाषा कई प्रकार की होती है और मै 'सुरों' को ही भाषा मानती हूँ और सुर अगर भाषा है तो उसमे से ऐसी अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति होनी चाहिए कि जो आसानी से सभी के समझ में आए | वे आगे कहती है कि स्वर एक बिन्दु एवं उसकी आंस के समान है अतः स्वरों के माध्यम एवं उनके मेल से व्यक्त हुआ 'भाव' जो 'राग' कहेलता है वो सम्पूर्ण प्रकृति मे व्याप्त होता है अर्थात विश्वात्मक बन जाता है | ऐसी अभिव्यक्ति के लिए कलाकार के मन की अवस्था भी पूरक रहे तो एक अलग ही अनुभूती होती है अर्थात इसी से श्रोताओं के मन भी साम्यावस्था मे आ जाते है | ताई और भी कहती है कि,शास्त्र के दायरे मे रहेकर ही प्रत्येक राग का एक विशिष्ठ भाव होता है, चैतन्य होता है अर्थात कोइ राग करूण रस का तो कोई **हास्य** रस का तो कोई **श्रृंगार रस** का द्योतक होता है | और उसी प्रकार से, **भावानुरूप** सुर लगाएँ जाएँ तो ही सही अभिव्यक्ति होती है और जो **'आत्मरंजन'** कहलाती है |"[60]

किशोरी ताई बड़ी श्रद्धालु थी | गोवा के भगवान रवलनाथ उनके कुलदेव थे | राघवेंद्र स्वामी को वे अपना गुरु मानती थी और उनको पूरी तरह से समर्पित रहेकर सारी सफलता एवं यश का श्रेय उन्हे देती थी | किशोरी ताई अपने घरमे रोज 2-3 घंटों तक पूजा करती थी| भारतीय शास्त्रीय संगीत के गुरु एवं संगीतज्ञ डॉ. श्री विकास कशालकर जी ने साक्षात्कार मे बताया कि, "ताई के पास विद्यार्थी सीखने आए तो भी अपना पूजा पाठ निपटायें बगैर वे बाहर नहीं आती थी, फिर चाहे कितना भी

[59] Vrundavan Gurukul by Pandit Hariprasad Chourasia (Nov 14,2015). Anubhav – Baithak with Smt Kishori Amonkar https://www.youtube.com/watch?v=JjfGLROSSfs&t=7281s
[60] Doordarshan Sahyandri KIshori Amonkar Interview https://www.youtube.com/watch?v=ILNkzk6tUC0&t=1414s

समय लग जाए ! पर जब ताई घंटों तक पूजा करके आती थी, उसके बाद बड़ी प्रसन्नता से सीखाने बैठती थी और तब उनके सुर ऐसे अद्भुत लगते थे कि ऊन सुरों की गूंज को भूलना संभव नहीं है |"[61]

ताई के साथ पंद्रह साल तक तबला संगत करनेवाले श्री भरत कामत जी ने साक्षात्कार में बताया कि, "ताई एक दैवी व्यक्तित्व था | उनके स्वभाव के बारे में लोगों में जो कुछ गलत फ़ैमि फैली हुई थी वैसे वे कभी नहीं थी परंतु वे अत्यंत अनुरागशील थी यह बात केवल उनके साथ रहने पर ही पता चल सकती थी | ताई अत्यंत प्रतिभासंपन्न थी और भारतीय शास्त्रीय संगीत के बारेमें उनके विचार एवं कार्य दोनों अद्भुत है | वे **प्रायः कहती थी कि महफ़िल में श्रोताओं को कोई राग के स्थान पर किशोरी आमोणकर दिखे तो ये मेरी हार है |**"[62]

किशोरी ताई को 'भक्ति संगीत' अत्यंत प्रिय था | संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम, संत जनाबाई, संत मीराबाई आदि उनके प्रिय संत थे | संत **मीराबाई** तो उन्हे विशेष रूप से प्रिय थी | दूरदर्शन सह्याद्री (हिन्दी) साक्षात्कार में ताई ने बताया है, मीरा उन्हे इतनी अपनी लगती थी कि मीरा के साथ वे बात कर सकती थी| मीरा उन्हे अपने में से एक अर्थात कृष्ण को पति मनाने वाली लौकिक स्त्री जैसी लगती थी | परन्तु उसके(लौकिक के) परे जाकर कृष्ण में एकरूप होनेवाली भी केवल मीरा ही थी |और इस दरमियान मीरा ने सहे हुए छल कपाटों से ताई बड़ी दु:खी होती थी और मीरा के दर्द को वे अपने सुर में, आवाज मे बाँधना चाहती थी | इसलिए ही किशोरी ताई केवल मीरा बाई के भजनों का कार्यक्रम 'मगन भई मीरा' करती थी |"[63]

किशोरी ताई के साथ अठारह साल तक संवादिनी पर संगत करनेवाले श्रीमान सुयोग कुंडलकर जी ने ताई के भक्ति संगीत के बारे में बताया की, " ताई के, 'मगन भई मीरा', 'तोची नादु

[61] कशालकर विकास. साक्षात्कार नवंबर 1,2021

[62] कामत भरत. साक्षात्कार, नवंबर 30, 2021

[63] Doordarshan Sahyandri KIshori Amonkar Interview
https://www.youtube.com/watch?v=ILNkzk6tUC0&t=1414s

सुस्वरू'(मराठी अभंग) जैसे केवल भक्ति संगीत के कार्यक्रम में, **संत साहित्य के शब्द एवं उससे निष्पन्न भावानुरूप 'राग' में,** ताई ने – स्वयं संगीतबद्ध की हुई प्रत्येक रचना को; प्रत्येक **पंक्ति का रटन करते हुए पच्चीस से तीस मिनट** तक गाती थी | अर्थात विशिष्ठ स्वरसंगती एवं उचित शब्दोंच्चार के माध्यम से, रचना के गूढ़ार्थ को श्रोताओं के हृदय पटल पर अंकित करती थी; अतः श्रोता भी उस वातावरण से एकरूप होते थे |[64]

ताई की प्रिय शिष्या श्रीमती नंदिनी बेडेकर, जिन्होंने 35 साल तक ताई से संगीत एवं सांगीतिक ज्ञान ग्रहण किया ; उनसे साक्षात्कार दरमियान उन्होंने बताया कि, "ताई को भजन अत्यंत प्रिय थे और उनको विशिष्ठ राग में या धुन में बाँधनेकी अपूर्व सिद्धि उन्हे प्राप्त थी | भजनों की धुन बनाने के लिए ताई जब हारमोनियम लेकर बैठती थी, और जैसे ही वे पहली बार अपनी उँगलियाँ हारमोनियम पर चलाती थी, उस भजन की धुन अनायास ही बन जाती थी | भजन के शब्दों के मुताबिक, उनका चिंतन करके उसमे रहनेवाले भाव के अनुसार ही ताई धुन बनाती थी | मराठी संत जनाबाई का भजन 'जनी जाय पाणीयासी' का उदाहरण देते हुए नंदिनी जी ने बताया कि, अगर कोई स्त्री कमर पर घट लेकर पानी भरने जा रही है तो उसकी चाल जैसी होगी वैसी ही धुन की निर्मिती ताई से होती थी, जिसका आभास उस भजन को सुनते समय जरूर होता है | इसप्रकार से, **ताई हमेशा 'शब्द' एवं 'भाव' का मनन चिंतन करके भजनों को बाँधती थी** |[65]

ताई की शिष्या, श्रीमती देवकी पंडित, ताई के बारे में कहती है कि, "ताई को भक्ति संगीत-भजन बहुत अधिक प्रिय था | वे जब भजनोंको धुन में बाँधती थी तब जिस किसीका भजन है, उस **पात्र की भूमिका में अंतर्भूत** होकर सोचती थी तथा उस भाव को महसूस करके धुन बनाती थी |"[66]

[64] कुंडलकर सुयोग, दूरध्वनी से साक्षात्कार, जनवरी 1, 2022
[65] बेडेकर नंदिनी, साक्षात्कार, दिसंबर 20, 2021
[66] पंडित देवकी, दूरध्वनी से साक्षात्कार

ताई को प्रकृति से असीम प्रेम था | भिन्न भिन्न प्रकार के सुगंध और सुगंधी पुष्पों की वे बड़ी शौकीन थी | पुणे के घर में थोड़े दिनों के लिए रहेने पर भी, अपनी छोटीसी टैरेस गार्डन को ताई अलग अलग प्रकार के सुगंधी पुष्पों के पौधों से सजाती थी | वे एक आदर्श गृहिणी के समान बुनाई, कढ़ाई, पेंटिंग, रंगोली इत्यादि मे माहिर थी | बुनाई में तो ताई इतनी माहिर थी कि, अपने हाथों से बुना स्वेटर जब किसीको भेट करती थी तब उसकी बुनाई मशीन जैसी प्रतीत होती थी | तेजश्री आमोणकर के साक्षात्कार अनुसार वे खाने की बड़ी शौकीन थी और स्वादिष्ट खाना पकाती थी |[67]

किशोरी ताई ने भरत मुनि, भामह, दण्डी, उदभट, भट्टनायक, भोज, क्षेमेन्द्र अभिनव गुप्त, कुंतक जैसे प्राचीन संगीतज्ञों के ग्रंथों का गाढ़ा अध्ययन किया था |[68] इन्ही संगीत ग्रंथों के माध्यम से, विशेषतः 'रस' शास्त्र का गहन अध्ययन करके, **'रस' शास्त्र** पर अपने विचार प्रकट करनेवाला **"स्वरार्थ रमणी"** नामक मराठी ग्रंथ ताई ने लिखा है |

किशोरी ताई कई पुरस्कारों से सम्मानित हुई थी जिसमे श्रृंगेरी मठ का 'सरस्वती' पुरस्कार, तीन चार राज्यों की डॉक्टरेट, पद्मभूषण – पद्म विभूषण प्रमुख है | परंतु इन सभी में, श्रृंगेरी मठ द्वारा दिये गए **'सरस्वती'** पुरस्कार की अहमियत ताई के लिए सर्वोच्च थी यह "भिन्न षडज" फिल्म मे उनके सुपुत्र श्री बिभास जी ने बताया है |[69]

इस धरातल पर जिसने भी जन्म लिया है उसे यहाँ से जरूर विदाय लेनी पड़ती है | इसी प्रकार से सुरों को परब्रह्म मानने वाली किशोरी ताई 3 अप्रैल 1917 को इस संसार से चीर विदाय लेकर

[67] Kala Kahani Episode 19: Tejashree Amonkar https://www.youtube.com/watch?v=KnQVRi1O61Q

[68] आमोणकर किशोरी(2017). *स्वरार्थ रमणी रागरससिद्धांत* (चतुर्थ संस्करण). पुणे: राजहंस प्रकाशन प्रा. लि।, 1025, सदाशिव पेठ, पुणे

[69] Indian Diplomacy Bhinna Shadja , A Film by Amol Palekar https://www.youtube.com/watch?v=ppQlc3NjuMw

परब्रह्म में विलीन हो गई | परंतु उनके चैतन्यमयी अद्भूत सुरों की झंकार आज भी अमर है और सदा अमर रहेगी |

3.6 डॉ वीणा सहस्त्रबुद्धे (ई. स. 1948 - ई. स. 1916)

सन् 14 सितंबर 1948 को उत्तर प्रदेश के कानपुर में, श्री शंकर श्रीपाद बोडस जी के घर शास्त्रीय संगीत के ग्वालियर घराने की ख्यातनाम गायिका, आध्यापिका, कुशल बंदीशकार एवं संगीतकार वीणा ताई का जन्म हुआ | वीणा ताई के पिता श्री शंकर बोडस, विष्णु दिगंबर पलूसकर जी के शिष्य थे | उस काल में भारत भर में सांगीतिक कार्य के प्रसार एवं प्रचार हेतु पलूसकर जी ने 100 से जादा शिष्य बनाए थे और उसी कार्य को आगे बढ़ाने के लिए पलूसकर जी ने ही श्री शंकर बोडस जी को उत्तर प्रदेश के कानपुर में रवाना किया था | गुरु के कहने पर 1926 में शंकर बोडस जी महाराष्ट्र के सांगली से कानपुर में जा बसे | कुछ भी सांगीतिक वातावरण ना होनेवाले औद्योगिक शहर कानपुर में शंकर बोडस जी ने अपनी प्रतिभा एवं महेनत से बच्चों से लेकर वृद्धों तक सभी को संगीत प्रेमी बनाया | उन्होंने 'शंकर संगीत विद्यालय' की स्थापना की | **शास्त्रीय संगीत की जटिलता जाकर उसमें रुचि उत्पन्न हो, इसलिए शंकर जी राग के सरगम गीत को 'कथा स्वरूप'** मे पढाते थे जिससे सभी विद्यार्थी इस संगीत शिक्षा में दिल से जुड़कर उसका आनंद उठाते थे | यही शास्त्रीय संगीत की शिक्षा शंकर जी ने अपने ज्येष्ठ पुत्र अर्थात वीणा ताई के बड़े भाई श्री काशीनाथ बोडस - तात्या जी को दी | वीणा ताई की माता शांता ताई ने संगीत की विधिवत तालिम पायी नहीं थी तथापि वे अत्यंत सुरीला गाती थी | इस प्रकार से एक सांगीतिक परिवार में ही वीणा ताई का जन्म हुआ था | तदुपरांत पं ओंकारनाथ

ठाकुर, पं विनायक राव पटवर्धन, पं कुमार गंधर्व, पं भीमसेन जोशी, बसवराज राजगुरु, वमानराव सड़ोलिकर जैसे कई दिग्गज कलाकार शंकर बोडस जी के घर रहेने आते थे और इसी कारण सम्पूर्ण घर में संगीत तथा सांगीतिक कार्य की चर्चा होती रहती थी; जिसका बहुत गहरा असर वीणा ताई पर पड़ा | संगीत की प्राथमिक शिक्षा वीणा ताई ने अपने पिता शंकर जी से पायी | पश्चात पिताजी के साथ साथ उनसे 13 साल बड़े भ्राता काशीनाथ जी से आगे की तालिम पायी | इसके अलावा पं वसंत ठकार, पं गजानन राव जोशी से भी उन्होंने मार्गदर्शन पाया था | अल्प समय के लिए वीणा ताई ने गानसरस्वती किशोरी आमोणकर से भी मार्गदर्शन लिया था | ताई ने बचपन में कत्थक नृत्य का प्रशिक्षण लिया था तथा वे उत्तम तबला बजाती थी |[70]

वीणा ताई ने कानपुर से ही संगीत में 'संगीतालंकार' तथा संस्कृत में 'एम ए' किया | पश्चात वे अपने पिता के संगीत विद्यालय में छात्रों को पढ़ाती थी | 1984 में वीणा ताई अपने परिवार के साथ पुणे में आ बसी | तत् पश्चात ताई ने पुणे के एस एन डी टी महाविद्यालय में कुछ साल के लिए 'विभाग प्रमुख' के पद पर कार्यभार सँम्भाला था | इसी समय काल में **"तराना"** इस विषय पर विशेष संशोधन करके, गांधर्व महाविद्यालय से **'संगीत प्रवीण'** अर्थात **'डॉक्टरेट'** की उपाधि भी सम्पादन की थी | कुछ साल के लिए वीणा ताई आय आय टी कानपुर मे संगीत आध्यापिका तथा निवासी कलाकार के रूप में तथा आय आय टी मुंबई में अनौपचारिक संगीत अभ्यास की अध्यापिका के रूप में कार्यरत थी | इसी के साथ साथ देश विदेशों के कार्यक्रमों में अपने संगीत का प्रस्तुतिकरण करती थी | वीणा ताई के बारे में उनकी शिष्य जया जी बताती है कि, "वीणा ताई ऊर्जावान, अनुशासन प्रिय होते हुए भी अत्यंत निर्मल एवं विनम्र थी | अतः उनके गले से निकला हुआ स्वर भी विशुद्ध तथा

[70] भदे शीतल, साक्षात्कार, नवंबर 3, 2021

दैवी लगता था| ताई ने, आदि शंकराचार्य जी के **"निर्वाण षटकम्"** के **छह अंतरे, भिन्न भिन्न (छह) राग में स्वरबद्ध** किये और इसे जब वे **गाती थी तो श्रोताओं को दूसरे जगत में ले जाती थी |**"[71]

वीणा ताई मूल रूप से ग्वालियर घराने की होते हुए भी उनकी गायकी में जयपुर तथा किराना घराने की कुछ लाक्षणिकताएँ दिखाई देती थी | ताई स्वयं बोलती थी कि, " मै केवल परंपरा से ग्वालियर घराने से हूँ परंतु कानपुर के हमारे घर पर सभी घरानों के लोगोंका आना-जाना रहता था इसलिए तालिम देते समय मेरे पिताजी ने भी कभी 'घराना' शब्द का उच्चारण नहीं किया था |"[72]

वीणा ताई संगीत का अध्यापन जितनी कुशलता से करती थी उतनी ही कुशलता से वे स्वयं को एक विद्यार्थी के रूप में ढालती थी | सम्पूर्ण जीवन पर्यंत जहाँ जिससे भी सीखने का मौका मिला, वे ग्रहण करती रही | फिर चाहे शिष्यों से भी कुछ नया सुने तो भी सीखने के लिए तैयार रहती थी | वीणा ताई की शिष्या शीतल भदे जी अपनी माता रूपी गुरु के बारे मे बताती है कि, " वीणाताई को मै आई (माँ) ही बुलाती थी | उनके सामने जब मै सीखने बैठती थी तब वे गुरु की भूमिका में आ जाती थी | आई के पास सीख कर में गायिका न बन सकी परंतु उनके संगीत के प्रभाव से मैंने करीब 250 बंदिशे बाँधी | एकबार धैर्य पूर्वक उन्हे रागेश्री राग का तराना सुनाने का जिक्र किया और उन्होंने जब सुना तो उन्हे इतना पसंद आया कि, अपनी जगह से खड़ी होकर उन्होंने मुझे आलिंगन दिया और सीखने की जीद की | मैंने कई बार उन्हे बताने का प्रयास किया कि नोटैशन के हिसाब से आप अपनी प्रतिभानुरूप गा सकती है | परंतु उन्होंने, उस तराने को मेरे से सीख कर सावंतवाड़ी के एक कार्यक्रम में प्रस्तुत किया | ऐसी मेरी निरहंकारी, विनम्र, विशुद्ध मन की सदा विद्यार्थी दशा में रहनेवाली गुरु को शतश: नमन |"[73]

[71] Raggiri Exclusive Interview with Jaya Vidyasagar II Indian Classical Singer II Veena Sahasrabuddhe https://www.youtube.com/watch?v=9WWTYcN7fZg&t=253s

[72] खांडेकर अतुल, दूरध्वनी से साक्षात्कार, मई 10, 2021

[73] भदे शीतल, साक्षात्कार, नवंबर 3, 2021

तालयोगी पंडित सुरेश तलवलकर जी साक्षात्कार में बताते है कि, "वीणा ताई ने बचपन से ही अनेक कलाकारों को सुना है और स्वयं की एक शैली बनाई| परंतु एक यशस्वी कलाकार होने के बावजूद भी, जब भी किसिको सुनती; फिर चाहे तबला सोलो हो, सितार हो, डान्स हो या गायन हो; उनके भाव एकदम विद्यार्थी जैसे विशुद्ध निरागस बन जाते थे (जो मैंने अपनी आँखों से कई बार देखा है) और उसमे से सीखने जैसा वे खोजती रहती थी | इसी लिए थोड़े समय में ही उनकी गायकी लोगों के हृदय तक पहुँच सकी |"[74]

ख्याल गायकी के साथ साथ वीणा ताई भजन भी बड़े प्यार से गाती थी | वीणा ताई की भजन गायकी के बारे में डॉ. अश्विनी भिड़े-देशपांडे बताती है कि, " **कोई भी भजन का सार 'भक्ति' है और वीणा ताई संगीत के प्रति सदैव समर्पित रहने वाली ऐसी भक्त थी कि भजन गाते समय उनमे सहज ही भक्ति उभर आती थी** |"[75]

कला समूह भोपाल द्वारा विणा ताई की चतुर्थ पुण्यतिथि के अवसर पर, उनके शिष्यों द्वारा श्रद्धांजलि का कार्यक्रम आयोजित किया गया था; उसमें श्रीमती कल्पना उमाशंकर अपने गुरु वीणा ताई के बारे में बताती है कि, " मेरी मातृभाषा कन्नड होने से, पुरंदर दास जी के कन्नड भजन सुनने के लिए वे हमेशा आतुर रहती थी तथा मैसूर के एक कार्यक्रम में उन्होंने पुरंदर दास जी के भजन का प्रस्तुतिकरण किया था | वे अक्सर मेरे से 'कीर्तन' भी गवाती थी|"[76]

पं कुमार गंधर्व जी तथा शंकर राव बोडस कुटुंब का एक दूसरे से विशेष स्नेह होने से कुमारजी कई बार कानपुर शंकर बोडस जी के घर जाते थे | **पं कुमार गंधर्व** जी **निर्गुणी भजन** गाते थे, गायकी

[74] Kala Samooh, Vidushi Veena Sahasrabuddhe Smriti Sangeet Samaroh 2020 | Veena Smaran | Evening https://www.youtube.com/watch?v=y1wpafl8rG0&t=9498s

[75] Remembering Veena Sahasrabuddhe - Documentary Promo https://www.youtube.com/watch?v=aBglfdfwFSM

[76] Kala Samooh, Vidushi Veena Sahasrabuddhe Smriti Sangeet Samaroh 2020 | Veena Smaran | Evening https://www.youtube.com/watch?v=y1wpafl8rG0&t=9498s

की उनकी शैली, उस भजन की वृत्ति आदि बातों के ताय्या एवं वीणा ताई के ऊपर **बचपन से संस्कार** हुए थे | अतः वीणा ताई को भी निर्गुणी भजन गाना पसंद था और कार्यक्रमों मे अक्सर गाती थी | फिर भी कुमार जी के भजन जब ताई गाती थी तब उसका भाव तथा मूल्यों को कायम रखते हुए अपनी **स्त्रियोचित शैली में** ढालकर गाती थी जो अत्यंत प्रभावशाली रहेते थे |[77]

वीणाताई के साथ कई कार्यक्रमों में संवादिनी पर संगत करनेवाले श्रीमान सुयोग कुंडलकर जी उनके भजनों के बारे में बताते है कि, " वीणा ताई अक्सर निर्गुणी भजन या कबीर भजन या कुछ नाथपंथी भजन गाती थी | उन भजनों में रहनेवाला **'निर्गुण' का अत्यंत 'तरल', शब्दातीत भाव; अपने साहित्यिक अध्ययन एवं तेजस्वी सुरों के माध्यम से श्रोताओं तक पहुँचा सकती थी** | अतः शास्त्रीय संगीत के साथ वीणा ताई की भजन प्रस्तुति भी श्रोताओं को मुग्ध करती थी |"[78]

वीणा ताई के पास 1984 से सिखनेवाली उनकी ज्येष्ठ शिष्या श्रीमती श्यामला जोशी जी कहती है कि, " ताई रियाज़ के समय राम नाम लेकर स्वर लगती थी और भगवान श्रीराम को स्वर पर विराजमान होते देखकर अंतर्मुख हो जाती थी | उन्हे भजन गाना अच्छा लगता था तथा उनसे भजन सुनना कुछ अलग ही शब्दातीत अनुभूति देता था | 1994 में एक कार्यक्रम में वे कन्नड भजन गाना चाहती थी, जीसे मुझसे सीख कर, उसका अर्थ समझ कर उसके उच्चारो का लगातार अभ्यास करके उत्तम प्रभावशाली ढंग से उन्होंने उसे प्रस्तुत किया| अपने गुरुतुल्य ज्येष्ठ बंधु ताय्या से भजनों को अपनी इच्छानुरूप अलग अलग रागों में बाँधकर सीखने की जिद करती थी | ताय्या ने सिखाए हुए भजन को राग मारवा में सीखनेकी वांछा भी ताय्या ने तुरंत पूर्ण की थी |"[79]

[77] गुरव अपर्णा, साक्षात्कार, नवंबर 2, 2021

[78] कुंडलकर सुयोग, दूरध्वनी से साक्षात्कार, जनवरी 1, 2022

[79] Kala Samooh, Vidushi Veena Sahasrabuddhe Smriti Sangeet Samaroh 2020 | Veena Smaran | Evening https://www.youtube.com/watch?v=y1wpafl8rG0&t=9498s

वीणा ताई के शिष्य श्री अतुल खांडेकर जी बताते है कि, "कानपुर में कुमारजी के आते रहने से तात्या और वीणा ताई के ऊपर निर्गुणी भजन के संस्कार हुए | कुमारजी की गायकी के प्रभाव से तात्या निर्गुणी भजनों को ऐसे बाँधते थे कि कुमार जी ने उन भजनों को पहले गाया है ऐसा आभास होता था | परंतु ये सारी तात्या की नई रचनाएं वीणा ताई बड़े प्रेम से गाती थी | निर्गुणी भजनों का **गहन अर्थ** समजने के लिए ताई ने **संत कबीर जी के साहित्य का विस्तार से अध्ययन** किया था और उसे ध्यान में रखकर ही वे गाती थी | काफी लोगों को भजन का गर्भितार्थ समज में नाही आता था परंतु वीणा ताई के विशुद्ध भाव एवं स्वर से वे ऐसे प्रभावित हो जाते थे कि देह भान भूल जाते थे और सुनते रहते थे| अतुल जी आगे बताते है कि, वीणा ताई **'भक्ति' के बारे में अक्सर कहा करती थी कि 'भक्ति' केवल रस ना रहेकर भाव बन जाएं और मेरा राग संगीत भी भजन बन जाएं |**"[80]

ऐसी गुणी, प्रतिभावान गायिका वीणा ताई को सन् 2012 में मज्जातन्तु संबंधी बीमारी हुई और धीरे धीरे उनका शरीर क्षीण होने लगा | करीब चार साल तक इस से लड़ते लड़ते 29 जून 2016 में उनका निधन हुआ | अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय ने वीणाताई को उनके मरणोत्तर, "महामहोपाध्याय" जैसी सर्वोच्च उपाधि से गौरवान्वित किया |[81] वैसे तो वीणा ताई आज शरीर से इस दुनिया में नहीं है, परंतु संगीत के माध्यम से वे श्रोताओं के दिल में अमर है |

[80] खांडेकर अतुल, दुर्धवन से साक्षात्कार, मई 10, 2021

[81] खांडेकर अतुल, दुर्धवन से साक्षात्कार, मई 10, 2021

3.7 पंडित राजन साजन मिश्र

पंडित राजन मिश्र (ई. स. 1951 - ई. स. 2021)

पंडित साजन मिश्र (ई. स. 1956 – आज तक संगीत की सेवा में कार्यरत है)

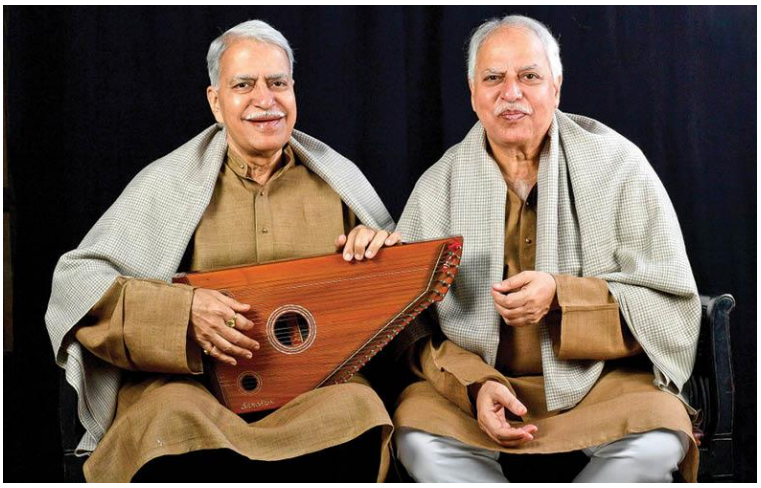

भारतीय शास्त्रीय संगीत की लगभग 350 से 400 वर्ष पुरानी बनारस घराने की, ख्याल गायकी की पारिवारिक परंपरा को आगे बढ़ाने में पद्मभूषण पंडित राजन मिश्र तथा पंडित साजन मिश्र जीवन भर समर्पित रहे | 29 अक्तूबर 1951 में जन्में राजन जी तथा 13 अगस्त 1956 में जन्में साजन जी पर बाल्यावस्था से ही एकसाथ अर्थात **'युगल गान' के संस्कार हुए और करीब 50 साल तक दोनों भाइयों ने उसे निभाया** | इनकी पारिवारिक गायकी (बनारस गायकी) बहुत पुरानी होने से इनके पिता, चाचा, दादा, परदादा सारे ही उनके समय के श्रेष्ठ संगीतज्ञ थे | अर्थात इन्होंने संगीत के वातावरण में ही अपनी आखें खोली तथा और कोई भाषा सीखने से पूर्व ही सुरों की भाषा सीख ली | पिता श्री हनुमान मिश्र तथा चाचा श्री गोपाल मिश्र उत्तम सारंगी वादक थे | पाँच साल की उम्र मे ही राजन जी का गंडा बंधन, श्रेष्ठ बुजुर्ग गायनाचार्य 'बड़े रामदास' जी से हुआ था परंतु गायकी की सम्पूर्ण तालिम इन्होंने अपने पिता एवं चाचा से पायी थी | इन दोनों भाइयों का गान जुगलबंदी न होकर सहगान बना रहे इसलिए उनके गुरु -पिता एवं चाचा ने संगीत को ईश्वर स्वरूप समझकर, प्रेम भाव से एक दूसरे को सुनकर पूरक बननेकी दृष्टि बचपन से ही उन बच्चों में डाली थी |

काशी जैसी अति प्राचीन एवं **पवित्र, धार्मिक-आध्यात्मिक** नगरी में, कबीर चौरा मोहोल्ले में राजन-साजन जी का जन्म होने से इस **क्षेत्र के संस्कार** भी उनके उपर पड़े | एक साक्षात्कार में साजन जी बताते है कि, " इस मोहोल्ले में संगीत से जुड़े कई प्रतिष्ठित कलाकार आसपास में रहेते थे | हमरे बगल में ही हमारे गुरुजी बड़े रामदास जी का घर था और उनके यहाँ, दोपहर में भोजन के दो घंटे छोड़कर सुबह 6 बजे से रात के 11 बजे तक संगीत चलता था | उनके यहाँ काफी शिष्यों का आना जाना लगा रहता था और उनकी निरंतर तालिम चलती थी | हमारे घर में पिताजी तथा चाचाजी का घंटों रियाज चलता था | चाचाजी तो 12 घंटों की बैठक लगाते थे और पसीने से इतने लत पत हो जाते थे कि, मिट्टी के चबूतरे में एक से डेढ़ फ़ीट अंदर गड जाते थे | हमारी उसी गली में सितारा देवीजी, पं सामता प्रासाद जी, पं गुदाई महाराज जी, पं किशन महाराज जी, गोपी कृष्ण जी, शारदा सहाय जी आदि सब निवास करते थे | अतः कही न कही से गायन, सितार, तबला, नर्तन जैसी आवाज निरंतर आती रहती थी | और कबीर जी का मंदिर हमारे घर से सटा हुआ था, जहाँ हररोज प्रातः 5 बजे मंदिर का बेल(घंट) बजता था तब हमारी माँ प्रातः कालीन भैरव राग की बंदिश गाती थी और हमें उठती थी | इस प्रकार से जीवन की बाकी विधाओं के साथ संगीत एक अविभाज्य अंग बन गया |"[82]

राजन साजन जी को बचपन से ही घर में मिलती हुई संगीत की तालिम का समय नियत रहता था जिसमें दो-दो घंटों के सत्र होते थे और अपना रियाज़ पूरा करके ही खेलने की अनुमति मिलती थी | तालिम के दौरान उनके पिता एवं चाचा भीमसेन जी, रोशन आरा बेगम जैसे महान कलाकारों के बारे में कहानी रूप में बताते थे और प्रोत्साहित करते थे | संगीत के साथ स्कूल की पढ़ाई भी जारी होने से, संगीत साधन करते हुए, राजन जी ने बी. एच. यु. से समाज शास्त्र में M.A.और साजन जी

[82] Bhai Baldeep Singh, Yaar Anād Virtual Baiṭhak Mēlā 65 with Pandit Rajan Sajan Misra https://www.youtube.com/watch?v=XefB2u-uWzQ

ने B.A. किया | साजन जी ने एक साक्षात्कार में बताया है कि, "राजन जी संगीत को व्यवसाय ना बनाकर केवल शौक के तौर पर उसकी साधना करना चाहते थे और इसी उद्देश्य से, सन 1973 में अपनी पढ़ाई पूर्ण करके अपने चाचा के बुलाने पर राजन जी दिल्ली में 'सोशल वेल्फेर अफ़सर' की ट्रैनिंग ले रहे थे; परंतु तकदिर कुछ और ही संकेत दे रही थी | तब **दिल्ली** में होनेवाले **'सतगुरु नामधारी फेस्टिवल'** में **सतगुरु जगजीत सिंह** जी ने उनका गायन सुना | राजन जी का संगीत सुनकर, उनका हुनर पहचान कर सतगुरु जी ने उनको ट्रैनिंग के दौरान मिलती हुई कमाई की रकम पुरे साल के लिए देने का वादा किया और उन्हे नौकरी छोड़कर अपने रियाज़ पर ध्यान देने का आदेश दिया | राजन जी ने इसे बड़े प्रेम पूर्वक स्वीकारा और उसे बड़ी श्रद्धा भाव से निभाते हुए उनके आशीर्वाचनों को प्राप्त किया | इस प्रकार से सतगुरु जी की, और कुछ व्यवसाय किये बिना सर्वकाल संगीत के प्रति समर्पित रहने की आज्ञापालन के फल स्वरूप इनका जीवन बदल गया, भाग्य चमक उठा और इनकी संगीत कला आसमान की ऊंचाईओ को छूने लगी" |[83]

अपनी सांगीतिक विरासत एवं काशी के धार्मिक वातावरण के कारण दोनों भाई बाल्य काल से ही मंदिरों मे **'हाज़री'** देते थे और इसी प्रथा को निभाते हुए राजन साजन जी ने काशी के **संकटमोचन मंदिर** में सन् 1967 में 2-4 हजार श्रोताओं के सामने **प्रथम** कार्यक्रम के रूप में अपनी कला पेश की जो प्रशंसनीय रही थी | पश्चात वे उभरते हुए कलकरों के रूप में देश भर में कार्यक्रम देने लगे |[84] सन् 1978 में दोनों ने **श्रीलंका** की पहली विदेश यात्रा की, जहाँ पर करीब **10 लाख रसिक** श्रोताओं के समक्ष गायन प्रस्तुत करना था| इतनी अधिक संख्या में श्रीलंका के लोगों के,

[83] Raggiri, Padma Bhushan Pandit Sajan Mishra Exclusive Interview Part 02 https://www.youtube.com/watch?v=fIVwg2j-284

[84] Raggiri, Padma Bhushan Pandit Sajan Mishra Exclusive Interview Part 01 https://www.youtube.com/watch?v=fIVwg2j-284

भारतीय शास्त्रीय संगीत सुनने के प्रति वे साशङ्क हुए परंतु बादमें शास्त्रीय संगीत के साथ अगले दिन सीखे हुए **'सिंहली' गीत को गाकर लोगोंको आचंबीत कर लोगों का दिल जीत लिया** |[85]

राजन जी साजन जी के गायन में **अजीब ताल मेल** दिखाई देता था | कोई भी कार्यक्रम की शुरुआत राजन जी अपनी सुरेल आलापी से करते थे | एक एक सुर का भाव सौन्दर्य दिखाते हुए राग को इस प्रकार से खोलते थे कि, श्रोताओं की आँखें अपने आप बंद होने लगती थी | बीच बीच में साजन जी अपने भारयुक्त आवाज में उन्हे साथ देते थे | इसी आलापी दरमियान राजन जी किसी एक स्वर के ऊपर रुक कर 'ईऽ ऽ ऽ ई' ऐसी आवाज लगाते थे, जिसके बारे में राजन जी स्वयं कहते थे कि, " **'ई' याने ईश्वर**.. जब मै उस **ई में डूब जाता हूँ तब ईश्वर आता है और जब मै उसमे से बाहर निकालता हु तब ईश्वर चला जाता है** |"[86]

आलापी के बाद दोनों साथ मे बंदिश शुरू करते थे | बंदिश को आगे बढाते हुए जब **तान** की शुरुआत होती थी तब, **तीनों सप्तकों में घूमकर सहस्रारचक्र तक** पहुचनेका आभास निर्माण करनेवाली तान गाकर साजन जी रसिक श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर देते थे | इस प्रकार से अपने संगीत को **'आत्मरंजक' बनाते हुए, एक दूसरे के लिए पूरक बनकर श्रोताओं को राग का दर्शन कराते थे** |

सन् 1987 के आसपास एकबार योगगुरु महर्षी 'महेश योगी' जी राजन साजन जी का गायन सुनके बहूत प्रभावित हुए और अपनी अमरिका स्थित संस्था की ओंर से तीन महीने के लिए आमंत्रित किया | इस दरमियान न्यू यॉर्क, सॅन फ्रांसिस्को, लॉस एंजेलिस जैसे प्रमुख शहेरो में उनके कार्यक्रम हुए | अमरिका में ही महर्षि जी के अनुरोध पर **"अष्टौप्रहर अर्थात प्रत्येक प्रहर में एक राग गाना"** यह

[85] वाघमारे रमेश(2018). *हिन्दुस्तानी रागदारी संगीतातील सुवर्ण युगाचे मानकरी.* (प्रथम आवृति). मुंबई : ग्रंथाली प्रकाशन, पृष्ठ 163

[86] वाघमारे रमेश(2018). *हिन्दुस्तानी रागदारी संगीतातील सुवर्ण युगाचे मानकरी.* (प्रथम आवृति). मुंबई : ग्रंथाली प्रकाशन, पृष्ठ 164

संरचना पर गायन किया, जो काफी लोकप्रिय रहा | इस कार्यक्रम के बाद पूरे विश्व भर से उन्हे आमंत्रण आने लगे |[87]

यु ट्यूब के एक साक्षात्कार में उपरोक्त कार्यक्रम के बारे में साजनजी बोले है कि, " हॉलण्ड में महेश योगी जी के अनुरोध पर, चौबीस घंटे के चौबीस राग की सीडीयों का रिकॉर्डिंग किया गया है तथा अमरिका, यूरोप के घर घर में वो है परंतु हमारे भारत में वो उपलब्ध नहीं है उसका हमें खेद है|"[88]

योगगुरु **श्री श्री रविशंकर** जी की प्रेरणा से, राजन साजन जी ने **पुणे में करीब 2750 गायकों को एक साथ बिठाकर 'मा बसंत आयो री' यह अत्यंत सुरीला 'बसंत बहार' सामूहिक राग गायन** के अभिनव प्रयोग के रूप में प्रस्तुत किया|[89]

सन् 1985 में **'सुरसंगम'** फिल्म के लिए, शास्त्रीय संगीत के ऊपर आधारित **11 गीतों के लिए पार्श्वगायन** किया एवं सभी गीत लोकप्रिय रहे है |[90]

राजन साजन जी के यहाँ 8 साल से सिखनेवाली उनकी शिष्या अर्चना जी अपने दोनों गुरुओं के बारे में बताती है कि, " मेरे बड़े गुरुजी, राजन जी लौकिक रूप से आज हमारे बीच नहीं है पर उनकी सूक्ष्म उपस्थिति मै हमेशा महसूस करती हूँ इसलिए मै दोनों के बारे में बताऊँगी | मेरे दोनों गुरु, बड़े गुरुजी और छोटे गुरुजी **श्रद्धा, भक्ति तथा आध्यात्म से ओतप्रोत है** | बड़े गुरु जी ओशो जी

[87] वाघमारे रमेश(2018). *हिन्दुस्तानी रागदारी संगीतातील सुवर्ण युगाचे मानकरी.* (प्रथम आवृति). मुंबई : ग्रंथाली प्रकाशन, पृष्ठ 163

[88] Dream Traders Film, टूट गयी राजन - साजन मिश्रा की जोड़ी... नहीं रहे राजन मिश्रा
https://www.youtube.com/watch?v=4xjE6jo3O90&t=11s

[89] Sansad TV, Shakhsiyat with Pt. Rajan and Sajan Mishra
https://www.youtube.com/watch?v=1x9LNmf0o_4&t=5s

[90] Dream Traders Film, टूट गयी राजन - साजन मिश्रा की जोड़ी... नहीं रहे राजन मिश्रा
https://www.youtube.com/watch?v=4xjE6jo3O90&t=11s

को मानते है तथा छोटे गुरुजी पारंपरिक रिवाज एवं मूर्तिपूजा में मानते है | वे दोनों ही अत्यंत विनम्र एवं अनुरागशील है और छोटे से छोटा आदमी या हम जैसे शिष्य भी जब उनके घर जाते है तो वे स्वयं हमें पानी और मिठाई देते है तथा हाल चाल पूछ कर आनेवाली व्यक्ति को एकदम सहज एवं प्रसन्न बना देते है | कभी सुर ना लगे तो दोनों गुरु हमारे आन्तरमन को जानने की, तकलीफ दूर करने की कोशिश करते है | प्रेम पूर्ण व्यवहार, अपने बड़ों के प्रति अत्यंत आदर तथा 60-65 साल की संगीत साधन के प्रति सदैव समर्पित भाव के करण उनके **'औरा' (आभामंडल)** में एक **दिव्यता** का अनुभव होता है | कई बार सीखने के लिए उनके घर जाने पर, बिना कारण ही अश्रु धारा बहने लगती है | ऐसे **दिव्य गुरुओं का संगीत भी दिव्य एवं पवित्र** है | संगीत का कोई भी प्रकार वे गाते है तब उसमे से **'प्रेम' एवं 'भक्ति' की धारा** ही बरसती है | जैसे **'ठुमरी' गाते समय श्रृंगार रस भी कृष्ण श्रृंगार-भक्ति में परिवर्तित** हो जाता है | परंतु **'भजन'** में तो शब्दों का भाव भी **'भक्तिमय'** होने से सुनते सुनते कब भाव समाधि लगती है उसका पता ही नहीं चलता | कई बार, गाते गाते **गुरुओं की आँखों** में से भी **अश्रुधार** बहने लगती है |

कार्यक्रम के **अंत में भजन गाना गुरुजी अक्सर पसंत करते** है क्योंकि वे मानते है कि कार्यक्रम के शुरुआत से गाते हुए जो कुछ भी गलतियाँ हुई हो उसके लिए भगवान से **माफी माँगे** और शास्त्र के कोई भी बंधन बिना **भगवान में लीन हो जाय,** समर्पित हो जाय | **पूरा वातावरण भक्तिमय हो जाय जिसमे श्रोता भी जुड़ जाय, एकदूसरे के हृदय मिले और भगवान उतर आए** |"[91]

श्रीमती विराज अमर, जो राजन साजन जी की 25 साल से गंडा बंधन शिष्या रही है वो अपने दोनों गुरुओं के बारे में बताना चाहती है कि, " **मेरे दोनों गुरु अत्यंत धार्मिक तथा आध्यात्मिक है** | वे दोनों ही काशी में जन्मे होने से उस क्षेत्र का प्रभाव भी उनपर है | दोनों गुरु स्वभाव से अत्यंत भावना प्रधान होने से उनकी गायकी में 'शब्दों' को विशेष महत्व है | दोनों ही गुरुजी कोई भी शैली प्रस्तुत

[91] म्हसकर अर्चना, दूरध्वनी से साक्षात्कार, दिसंबर 3, 2021

करते है तब शब्दों के **'भाव'** को ध्यान में रखकर बड़ी **आर्तता** से गाते है और इसी वजह से उनकी **कोई भी सांगीतिक प्रस्तुति 'भजन'** बन जाती है | पहेले बहुत समय तक तो वे यही कहते थे कि **'हमारा पूरा गाना भजन ही है'** क्योंकि गुरुजी सदा समर्पित भाव से लीन होकर ही गायन करते थे अतः अलग से भजन गाने का प्रयोजन नहीं रहता था | परंतु **आम आदमी** के लिए जब तक **'ईश्वर' का नाम** नहीं लिया जाता, उसमें आसानी से भक्ति भाव निर्माण नहीं होता; यही सोच से वे कार्यक्रमों में भजन गाने लगे | गुरुजी श्रीराम भक्त है, काशी के होने से महादेव का प्रभाव भी उनपर है फिर भी वे गुरुबानी, गुरु नानक जी, तुलसीदास, कबीर आदि सभी के तथा स्वरचित भजन अत्यंत भावपूर्ण शैली से गाते है | कोई भी **'भजन'** के शब्द ही भाव प्रकट करने वाले होते है अतः गुरुजी के भजन गायकी का कुछ विशेष परिणाम दिखाई देता है | भजन सुनते सुनते कई **लोगों की आँखें अपने आप बंद** हो जाती है, कुछ **शांत ध्यानस्थ** हो जाते है, कई **लोगों की आँखो से अश्रुधार** बहने लगती है जिसका मैंने कई बार अनुभव किया है | इतनाही नहीं परंतु **अनेक बार गुरुजी स्वयं गाते गाते भावुक हो जाते है और उनकी आँखों से अश्रु बहेने लगती है तथा कुछ क्षण भाव समाधि लग जाती है** |"[92]

राजन-साजन जी के कई कार्यक्रमों में संवादिनी पर संगत करनेवाले श्रीमान सुयोग कुंडलकर जी बताते है कि, "राजन भैय्या के दुर्दैव से, पुणे में शास्त्रीय संगीत के अंतिम साबित हुए कार्यक्रम में दोनों भाइयों ने, रसिक श्रोताओं को **मंत्रमुग्ध करनेवाला 'दरबारी'** राग गाया और तत्पश्चात भजन शुरू किया | **भजन** की शुरुआत से ही उन्होंने शब्दों के **भावानुरूप ऐसे स्वर लगाएँ की, श्रोता अपनी सुध-बुध खोकर सुनते ही रहे और कार्यक्रम का अंत होनेपर तालियाँ बजाने की सूझ भी उन्हे न रही** |" [93]

राजन साजन जी ने अपनी संगीताराधना को आगे बढाते हुए, पूरे विश्व को एक साथ बाँधकर प्रेम तथा **भाईचारे** का संदेश फैलाने के लिए **"भैरव से भैरवी तक"** की संकल्पना निर्माण की | इस संकल्पना के अनुसार भैरव प्रातः कालीन राग है तथा भैरवी राग से महफ़िल समाप्त होती है, अतः

[92] अमर विराज, दूरध्वनी से साक्षात्कार दिसंबर 3, 2021

[93] कुंडलकर सुयोग, दूरध्वनी से साक्षात्कार, जनवरी 1, 2022

राग समय चक्र अनुसार उन के बीच मे आनेवाले सभी रागों की झलक दिखाना | इस **विश्व यात्रा के अंतर्गत 4 खंडों के 50 शहेरों मे 70 कार्यक्रम तय हुए थे तथा 18 नवंबर 2017 को वाराणसी के अस्सी घाट** से इसकी पावन शुरुआत हुई थी |[94]

अपनी परंपराओं तथा सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने के हेतु से Milestone Ent / Free spirit music के लिए भी दोनों भाइयों ने **'Chants of Moksha' , 'Chants of Surya' तथा 'Chants of Shiva'** इन तीन एल्बम के लिए गायन किया|[95]

इस प्रकार से एक दूसरे का प्रेम पूर्वक साथ निभाते हुए, जैसे **'दो जिस्म एक आत्मा'** बने रहकर राजन जी साजन जी संगीत की पूजा करते चले आएँ | और कुछ सपने आँखों में सजे हुए थे कि अचानक कोविड 19 की वैश्विक महामारी का राजन जी के ऊपर हमला हुआ और अपनी जोड़ी तोड़कर उन्होंने 25 अप्रैल, 2021 को इस दुनिया से विदाय ले ली | अब पुरखों की इस विरासत को आगे ले जाने की जिम्मेदारी, दु:ख से व्याकुल साजन जी तथा उनके बच्चे रजनीश, रितेश और स्वरांश जी बड़े धैर्य पूर्वक निभा रहे है |

इसप्रकार से इस अध्याय में शोधार्थी ने, प्रमुख शास्त्रीय संगीत गायक कलाकारों द्वारा भक्ति संगीत में दिया हुआ योगदान, भक्ति संगीत संबंधी उनके विचार तथा उन कलाकारों की एवं श्रोताओं की अनुभूतियों के बारे में समीक्षा की है | अगले अध्याय में शोधार्थी ने इन सभी महान कलाकारों ने गायी हुई अनेक भक्तिरचनाओं में से एक एक रचना लेकर उसका विश्लेषण करनेका प्रयास किया है|

[94] Clown Times TV, पद्मभूषण पं. राजन - साजन मिश्र "भैरव से भैरवी" तक
https://www.youtube.com/watch?v=mzBEKA7t8lk
[95] Free Spirit Music Rare Interview of Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra ji - Part 2 | Recorded 1999
https://www.youtube.com/watch?v=AdwO1UKd9Vo